प्यारे मधु दंडवते जी

सादर प्रणाम।

आज बड़े दुःख के साथ आपको यह पत्र लिखना पड़ रहा है क्योंकि हमारे प्रिय नेता श्री प्रकाशवीर शास्त्री आपकी सरकारी रेल में सफर करने के कारण परलोक सिधार गये हैं।

यूं तो मैं आपका शुभचिंतक हूं ही लेकिन मुझे इस बात की खास खुशी है कि आपकी रेलें देर से आने-जाने लगी हैं। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि मेरी ट्रेन कभी मिस नहीं होती क्योंकि मुझे देर से स्टेशन पर पहुंचने की आदत है।

आपकी सरकार ने एक काम बहुत अच्छा किया है कि हर स्कूटर और मोटर साइकिल चलाने वाले के लिये हेलमैट न पहनना कानूनन जुर्म बना दिया है। पिछले महीनों के रेलके एक्सीडेन्ट गिनकर ऐसा लगा कि आपने हेलमैट बनाने वालों से कोई साठगांठ कर ली है और आप जल्दी ही हर रेल में सफर करने वाले के लिए हेलमैट पहनना लाजमी कर देंगे। जितने लोग हेलमैट खरीदेंगे उतना ही आपको लाभ होगा।

आपकी सेवा में एक सुझाव रखना चाहता हूं। मेरे विचार में रेलों के एक्सीडेन्ट से बचने के लिए सिर्फ हेलमैट से ही काम नहीं चलेगा, या तो हर एक आदमी लोहे के सन्दूक में बन्द होकर जाया करे या फिर पुराने जमाने के सैनिकों के कवच का इन्तजाम करें। यदि आप सबके लिये कवच पहनना कानूनन जरूरी कर दें तो आपकी स्टील मिनिस्ट्री में बहुत लाभ होगा और आपका रेल मिनिस्ट्री से इस्तीफा लेकर आपको स्टील मिनिस्ट्री में भेज दिया जायेगा।

आपका
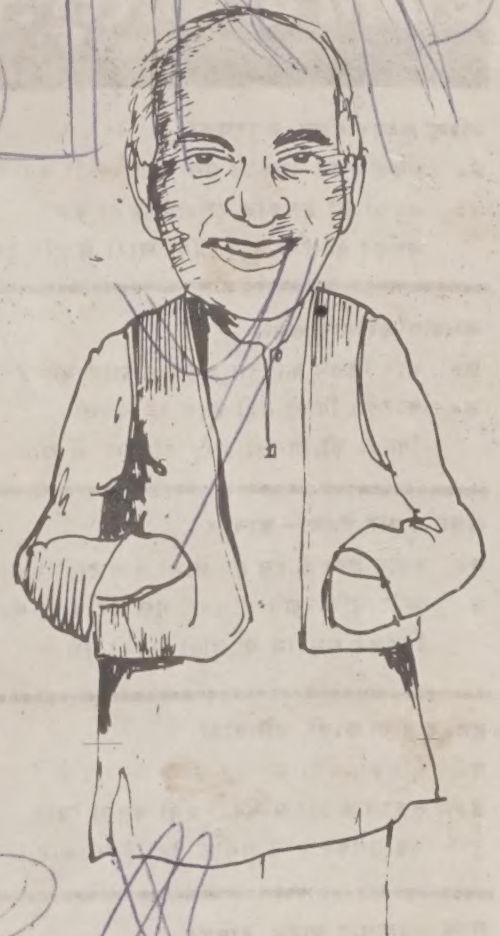
मुख्य पृष्ठ पर

करत-करत अभ्यास के
जड़मत होत सुजान
चिल्ली भार उठाने में
सबसे बना महान।
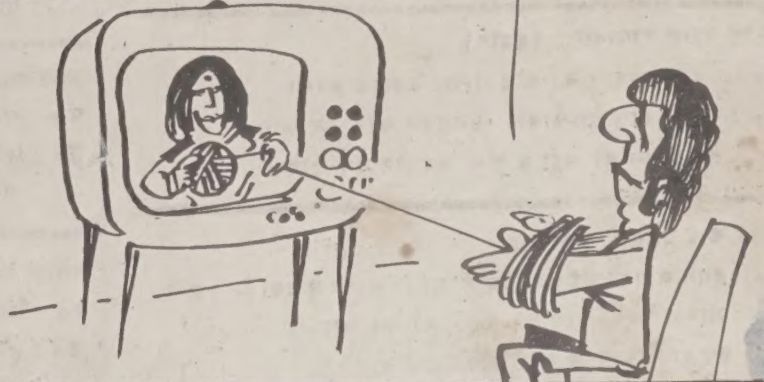
अंक : ४९, १५ दिसम्बर से २१ दिसम्बर १९७७ तक
वर्ष : १३

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
उपसहसम्पादक : कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज़ साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-2

चन्दे की दरें
छमाही : २५ रु०
वार्षिक : ४८ रु०
द्विवार्षिक : ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

नरेन्द्र कुमार बीना, कपूरथला

प्र० : भगवान को नमकीन प्रसाद क्यों नहीं चढ़ाया जाता ?

उ० : लड़कों को नमकीन ही लड़की हों मंजूर,
भगवन् को मिष्ठान्न प्रिय, खारी से हरि दूर ।

कुलदीप अरोड़ा—कैथल

प्र० : आप कितने कारतूस अब तक छोड़ चुके हैं ?

उ० : कारतूस गिनते नहीं छोड़ रहे चुपचाप,
गिनती की विनती करें, 'दीवाना' से आप ।

अजय कुमार मेहता—कानपुर

प्र० : क्लीन-शेव्ड के इस युग में भी आप दाढ़ी-मूंछ क्यों रखते हैं ?

उ० : ऋषि-मुनि रखते थे सदा, मुख पर दाढ़ी-मूंछ,
विद्वजन समुदाय में, होती उनकी पूछ,

हामिद हसन काजी, बांसवाड़ा

प्र० : प्रेमिका, प्रेमी को कब उल्लू बनाती है ?

उ० : नफरत करती प्रेमिका, प्रेमी करता प्यार,
तब उसको उल्लू समझ, देती है फटकार ।

लाल नन्दकुमार यादव, रामपुर

प्र० : काकी कभी आपको डांट लगाती है तो आप क्या कहते हैं ?

उ० : बुझ चुका है तुम्हारे हुस्न का हुक्का,
वह तो हम हैं कि गुड़गुड़ाये जाते हैं ।

रोशन व्यास राधानगर, (इंदौर)

प्र० : तकदीर बनाने का कोई नुस्खा बताइये काका ?

उ० : दूध में डाल दो चावल, उबलकर खीर बन जाए,
तपे ईमान की भट्ठी में श्रम, तकदीर बन जाये ।

अमर चन्द बाधिच, सुजानगढ़

प्र० : हमने आपको कई पत्र दिये हैं, शायद काकी ने दबा लिए हैं ?

उ० : मार रहे क्यों व्यर्थ ही, कोरी कल्पित चोट,
पत्र दाबकर लाभ क्या, काकी दाबे नोट ।

नारायण सचदेव, इंदौर

प्र० : एक लड़की से शादी करके, दूसरी से प्रेम किया जा सकता है क्या ?

उ० : जीवन सरिता में नहीं, उन लोगों की खैर,
एक साथ जो रख रहे, दो नावों में पैर ।

योगेश कुमार अग्रवाल, डीमापुर (नागालैंड)

प्र० : क्या करूं काका ! याद आता है गुजरा हुआ जमा[ना]

उ० : आशा-भाषा बोलिए, तज संकल्प-विकल्प,
पुनः जवानी पाइए, करके कायाकल्प ।

राजू चावला, चन्द्रपुर (महाराष्ट्र)

प्र० : कांकाजी, प्रश्नों के दोहे काकी से पूछकर लिखते हो ?

उ० : प्रथम चरण काका लिखें, और न लिखता कोय,
दूजा काकी बोलती, दोहा पूरा होय ।

सुभाष कुमार सोन्थालिया, आमूरिया बाजार

प्र० : इंसान और दौलत में कौन बड़ा है ?

उ० : देख जमाने की हवा, तथ्य-सत्य पहचान,
आज खरीदा जा सके, दौलत से इंसान ।

नरेश प्रिंस, मुजफ्फर नगर

प्र० : काका के कारतूसों से दिल में छेद हो गए हैं, कैसे ठीक [करें ?]

उ० : इन छेदों से सीखिए, हास्य-व्यंग्य के भेद,
खेद करो मत छेद से, रख अच्छी उम्मेद ।

साऊद, जामा मस्जिद (दिल्ली)

प्र० : जब कभी गुस्सा आए तो क्या करें ?

उ० : चपत मार लो गाल पर, गुस्सा ठंडा होय,
प्रायश्चित कर लीजिए, अंतर्ज्ञान टटोय ।

अखिलेश शर्मा, जामनगर

प्र० : श्री मुरार जी के स्वमूत्र सेवन करने पर आपके विच[ार ?]

उ० : संजय जी के पांच थे, बीस इंदिरा-सूत्र,
श्री मुरार जी धन्य हैं, केवल एक 'स्वमूत्र' ।

सतीश शर्मा, अबोहर (पंजाब)

प्र० : आप काकी पर छींटाकशी क्यों करते रहते हैं ?

उ० : होकर के नाराज जब, करती वे बकबक,
छींटे मारें हास्य के, तबियत होती झक्क ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

फिल्मी काकटेल पार्टियों के लिये नये पब्लिसिटी स्टंट

फिल्मी काकटेल पार्टियां बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। कहा जाता है कि हीरो-हीरोइनों को फिल्मों में लेने के फैसले निर्देशक निर्माताओं द्वारा यहीं लिये जाते हैं। नतीजा यह होता है कि प्रायः नई कभी-कभी पुरानी अभिनेत्रियां इन पार्टियों में अजीब-अजीब हरकतें करके लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश करती हैं, खास कर निर्माताओं व बड़े हीरो का ध्यान। कभी कोई स्ट्रीकिंग कर बैठती है तो कोई निराले कपड़े पहन कर जायेंगी। कई तो नशे का बहाना कर किसी निर्माता की गोद में बैठ जाती हैं। गर्ज यह कि किसी भी तरह आकर्षण का केन्द्र बनना है। हम ऐसी नई अभिनेत्रियों के लिए कुछ नए दीवाने फार्मूले खोज कर लाये हैं जिन्हें जरूरतमंद नई अभिनेत्रियां काकटेल पार्टियों में आजमा कर बरबस लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच सकती हैं।

और सब तो गले में हीरे-मोती या लॉकेट पहन कर जायेंगी। आप सपेरों की तरह पालतू सांप गले में लपेट कर जाइये। पार्टी में आप आकर्षण का केन्द्र बन जायेंगी।
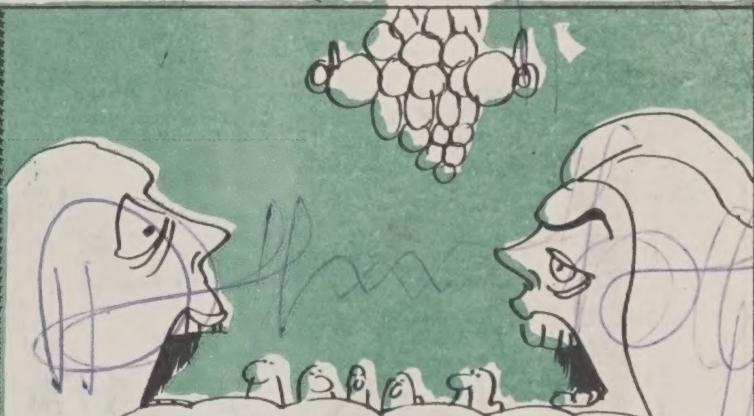
आपकी अपनी जैसी ही कोई अभिनेत्री सहेली हो तो दोनों मिलकर पार्टी में झगड़ा करें, एक-दूसरे की सात पुश्तों तक की खबर लें। लड़ाई मार-पीट तो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती ही है।

या मुँह पर मुखौटा पहन कर जायें। पार्टी में किसी हालत में अंत तक न उतारें। लोग आपकी ओर आकर्षित होंगे कि यह कौन हो सकती है।

आप बैटरी के सैल खरीदने जाते हैं तो दुकानदार लट्टू जला कर उसे टैस्ट करके देता है। वही छोटा-सा टैस्टिंग सेट लेकर बालों में फिट कीजिए। जलता लट्टू बालों से बाहर ऐसे ही निकला रहे जैसे कि बालों में लगा फूल हो। कुछ घटिया किस्म के डेस-फूल निर्माता जरूर आकर्षित होंगे।

आपने पुलिस कारों की छत पर घूमने वाली रोशनी देखी होगी जो तीखी सायरन के साथ घूमती है। उसका एक छोटा मॉडल बनवा कर सिर पर पहन कर पार्टियों में जाइये।

आक्का टाक्का पूं-पूं
लोगों को ग्रीट करने का कोई नया ही तरीका अपनायें। यह तरीका कल्पित भी हो सकता है। लोग हक्के-वक्के आपको देखेंगे ग्रीटिंग का जवाब न दे ' कर। बस आप उनके विचार का केन्द्र बन जायेंगी।
और वालों में फूल लगा कर जाती हैं आप सींग लगा कर देखिये। कुछ न कुछ असर जरूर होगा।
यदि कॉकटेल पार्टी रुफ टॉप (छत) पर हो रही हो तो आप पैराशूट से उतरने का यत्न करें। निशाना चूक गया तो ज्यादा से ज्यादा यही होगा कि एक हाथ की हड्डी-वड्डी टूट जायेगी। लेकिन यह स्टंट इतना रिस्क लेने लायक है।
शैम्पेन गिलास से शैम्पेन, चम्मच से ऐसे पीना शुरू करें। जैसे आप आइसक्रीम खा रही हों। लोग ताज्जुब से आपको देखेंगे।
सबसे अचूक उपाय तो यही रहेगा कि पार्टी में आप जयपुर की ललायन की तरह गज भर का घूंघट काढ़ कर जायें। फिल्मी पार्टियों के लिये उतनी ही धमाकेदार घटना होगी जैसी भारत के लिये पोखरन का अणु विस्फोट था।
मुँह से लपटें निकालने की प्रेक्टिस करें। सर्कस वालों से यह राज सीखा जा सकता है, कॉकटेल पार्टियों में इसे आजमायें। मुँह से लपटें निकालते हुये ही बात करें। स्टंट फिल्मों वाले जरूर आकर्षित होंगे।
वाकी सब कारों में जायेंगी आप गधे पर चढ़ कर जायें। कुछ ही मिनटों में आप चर्चा का विषय बन जायेंगी।
चेहरे पर फासफोरस मल कर जाइये और अंधेरे कोने मे खड़े हो जायें। चेहरा लट्टू की तरह चमक कर आसपास वालों का ध्यान खींचेगा।
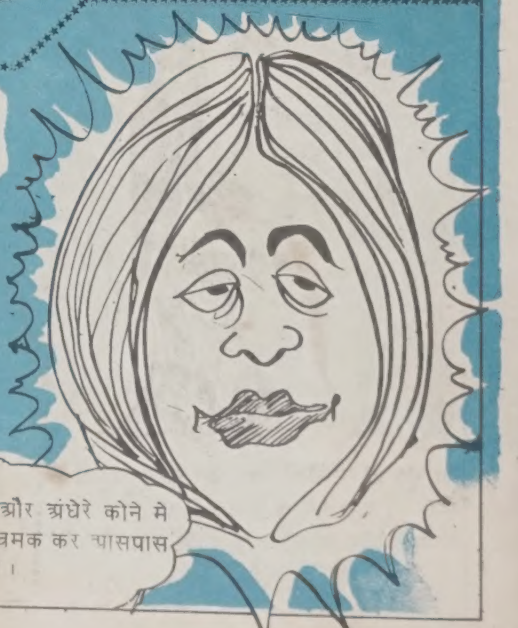
या लम्बी चोटी गूंथ कर सिरे पर पटाखों की लड़ी बांधें (जैसे बच्चे कुत्ते की पूंछ पर बांधते हैं) कॉकटेल हाल में प्रवेश से पहले लड़ी में माचिस लगा दें। तड़ातड़ सब आपको देखेंगे।
हॉल में दाखिल होते ही दरवाजे पर से ही एक ख़ाली फायर करें। सबको अपनी-अपनी जगह खड़े रहने का आदेश दें। लोग समझेंगे सुल्ताना डाकू डकैती मारने आयी है। सब आपको ओर देखने लगेंगे।
पार्टी में ऐसा भेष धर कर जाइये जैसे आप मंगल ग्रह की वासी हों। सब आपको घेर लेंगे. होटल वालों को आप अपनी तरफ मिला सकें तो एक नकली उड़न तश्तरी होटल के प्रांगण में खड़ी कर दें (यह कागज या घासफूस किसी चीज का भी हो सकती है)। आप खिड़की से नीचे खड़ी उड़न तश्तरी की ओर इशारा करें। सिर्फ इशारों से बात करें। आपके चारों ओर मेला-सा लग जाये तो स्वांग उतार कर असली रूप में आयें।
पार्टी के कपड़े ऐसे सिलवायें जिनमें बाहर की ओर कांटे से निकले हों, जैसे कैक्टस का पौधा हो। आप पार्टी में जिस किसी को छूती हुई गुजरेंगी वह मुड़ कर आपको जरूर देखता रहेगा।
या स्कॉच व्हिस्की वाइन गिलास में पीने की जगह फीडिंग बॉटल में डाल कर पीना शुरू करें। लोग कौतुहल वश जरूर आपके पास आकर खड़े हो जायेंगे और देखेंगे।
बच्चों का एक खिलौना आता है जिसे फर्श पर रख आप धागे से खींचते चलते हैं तो टर्र-टर्र-टर्र-टर्र की तीखी आवाज आती है। अपनी मैक्सी के पीछे नीचे धागे से वही खिलौना बांध कर चलिये। टर्र-टर्र की आवाज जरूर लोगों का ध्यान आपकी ओर खींचेगी।
RATATATARAT
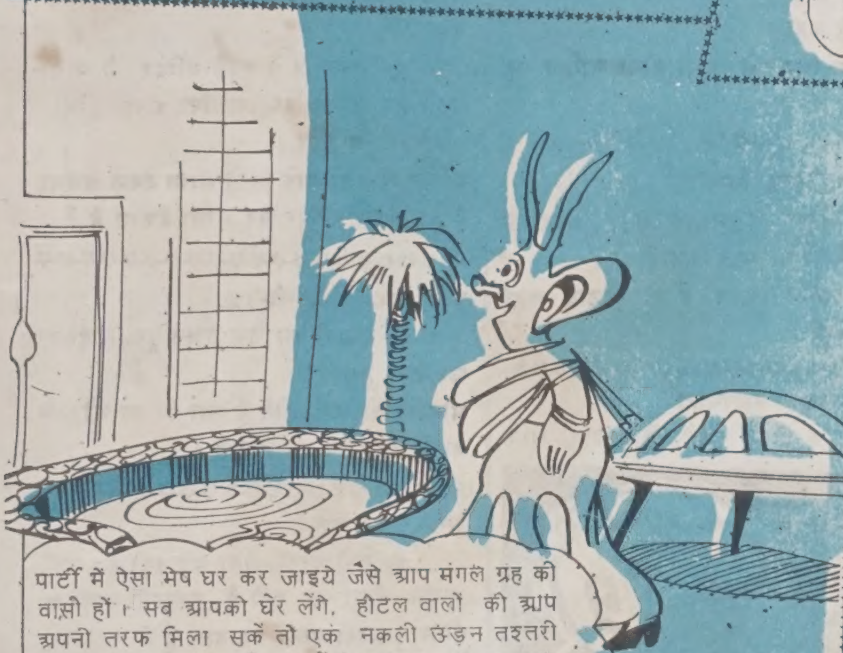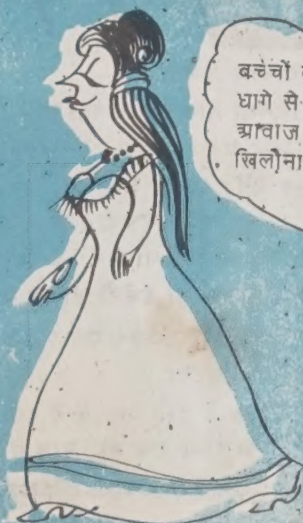
भोजराज शर्मा—दुलियाजान

● 'तुमने मुन्ने को सर पर चढ़ाया है,' पत्नी पति से बोली।
नीचे उतारने पर बहस हो रही है या लाड़-प्यार वाली बात है।

जगदीश राय—डबवाली (हरियाणा)

● अध्यापक छात्रों को समझाते हुए, 'नेपोलियन इतना बलवान और निडर था कि 'डर' शब्द का अर्थ तक नहीं जानता था।'
अनपढ़ था या बलवान साफ-साफ बताओ।

उज्जवल कुमार—गंज बासौदा

● डाकू बोला, बन्दूक मार दूंगा।
क्या गोलियां खत्म हो गई हैं?

मो० अशरफ अली खां—पटना सिटी

● पिता ने बेटे को समझाते हुए कहा, 'बेटा रोओ मत हंसो।'
हंसने को कहा जा रहा है या रोने को?

अमरेश्वर सहाय—सासाराम

● सुरेश भैया बुला रहे हैं।
सुरेश को भैया बुला रहे हैं या सुरेश भैया किसी को बुला रहे हैं।

जोहर अली—इन्दौर

● झील के उस पार चलोगे।
क्या काम पड़ गया झील के उस पार जाने का या फिल्म झील...

शिवकुमार—गाजियाबाद

● चाय पियेगा किसी ने अपने साथी से पूछा।
'नहीं चाय पीली है' जवाब मिला।
चाय का रंग पीला है या चाय पी जा चुकी है?

सुदेशकुमार—बम्बई

● 'सिनेमा हाल पर जाकर मेरा नाम ले देना वह तुम्हें अन्दर भेज देंगे' सिफारिश करने वाले ने कहा।
सिनेमा के अन्दर कर देंगे या हवालात में? यह तो बताओ।

नरेश—मुजफ्फरनगर

● मुझे चश्मा दे दो, मित्र बोला।
पानी का चश्मा या धूप का?

● मुझे लड़की के हाथ पीले करके ही चैन मिलेगा।
क्यों क्या रंग बनाने का कार्य चाहते हो और और यह जानना चाहते हो कि रंग कच्चा है या पक्का।

जगजीतसिंह राणा—देहली

● 'इन्दु धुली हुई दाल ले आओ' मां ने बेटी से कहा।
दाल किस साबुन से धुली होनी चाहिए यह और बता दो।

अनूपकुमार—नई दिल्ली

● ग्राहक (हलवाई से), 'जल्दी से मुझे डिब्बे में डालकर मिठाई दो।'
डिब्बे में आपको डाल दें तो मिठाई कहां रखी जायेगी।

दिलीप कुमार—भाटापारा

● एक मित्र दूसरे से, 'यार आज

टाकीज चलेगा।'
सिनेमा हाल खुद चलेगा या...?

यू० एन० शर्मा—आगरा

● एक अखबार में, 'पुलिस द्वारा डकैती की पूर्ण जांच की जायेगी।'
क्या पुलिस भी डकैती डालने लगी है?

सुरेन्द्र—सिरसा

● मैं तुम्हें दान में दे दूंगा।
कोई वस्तु या इन्हें ही दान में दे दोगे?

प्रेमसिंह चरण—पाली (राज०)

● यह दीवाना पढ़ता ही रहता है।
दीवाना पत्रिका पढ़ने की बात हो रही है या पढ़ने वाला ही दीवाना है।

● यह सुन कर मेरा दिल बैठ गया है।
स्टूल पर या कुर्सी पर?

जयकिशन अग्रवाल—बीकानेर

● 'हिन्दी बोलो', अंग्रेजी में बोलते हुए को किसी ने रोका।
हिन्दी शब्द बोलना है या हिन्दी भाषा प्रयोग करनी है?

मोहन कुमार—बम्बई

● इन्तजार की घड़ियां गुजर गयीं।
यदि घड़ियां मर गई तो समय कौन बतायेगा?

● 'स्कूल जाते वक्त मन्दिर से माथा टेकते हुए जाना, तुम्हारा पेपर अच्छा होगा,' मां ने बेटे से कहा।
मन्दिर से आगे सारे रास्ते माथा टेकते चलना है या केवल मन्दिर पर माथा टेकना है?

प्रदीप संगम—दिल्ली-३५

● मदारी का खेल देखने पूरा मोहल्ला आ खड़ा हुआ।
मोहल्ले भी खड़े होते हैं क्या? या मोहल्ले वालों का जिक्र हो रहा है।

सनम—नई दिल्ली

● मेरी पत्नी गीता पढ़ रही है।
भगवद् गीता पढ़ रही है तुम्हारी पत्नी या गीता तुम्हारी पत्नी का नाम है?

● मेरे पिता ने मां को खूब डांटा।
यह तो बताओ तुम्हारी मां को डांटा या अपनी मां को?

अशोक कुमार—कलकत्ता

● कैरम खेलते हुए राम-मोहन से बोला, 'अपनी पाकेट से गीटियां निकालो।'
पेन्ट की जेब से या कैरम की...?

अर्थ-अनर्थ
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

पंचतंत्र
अरे-अरे ! यह तो अपना ही लापता साथी लल्लू प्रसाद है। तुम्हारी यह हालत कैसे हुयी ? तुम कैद में हो ? तुम्हारा जिस्म इतना बड़ा कैसे हो गया ?
छज्जूराम, अपनी तो जिन्दगी बर्बाद हो गई। एक प्रोफेसर के कब्जे में आ गया। वह मुझ पर अपनी एक नयी फार्मूले की दवा का एक्सपेरीमैंट कर रहा है। जिससे जानवरों के शरीर कई गुणा बढ़ जाते हैं। तुम अपनी जान की खैर चाहते हो तो उड़ जाओ। प्रोफेसर ने देख लिया तो तुम्हें भी धर देगा।
उड़ते-उड़ते
क्यों न मैं अपने यार से वही थोड़ी-सी दवा मांग लूं ? मैं भी कई गुणा आकार में बड़ा हो जाऊंगा और सारे छत्ते वालों पर रौब झाड़ूंगा।
यह रही दवा। इसे खाकर जब बढ़ जाऊंगा तभी अपने छत्ते वालों में जाकर हल-चल मचा दूंगा।
याहू !
वर्र का आकार कई गुणा बढ़ जाता है।
पहचाना मुझे ? मैं वही छज्जूमल हूं जो इसी छत्ते में बढ़ई का काम करता था। मैंने तीन दिन शिवजी की घोर तपस्या की। उन्होंने मुझे वर दिया कि बेटा तू सुपर वर्र बन जायेगा और सारे छाते पर राज करेगा। सुना तुमने...आज से मैं यहां का डिक्टेटर हूं।
जो मेरा हुक्म नहीं मानेगा उसकी खाल खिंचवा कर उसमें डी.डी.टी. भरवा दूंगा।
इस छाते के छेद मेरे शरीर के लिये छोटे हैं। मैं आज यहीं डाल पर आराम फरमाऊंगा।
अभी तो आराम कर लीजिए, साहब रात होने वाली है।
कल सारे इंजीनियर और मजदूर मक्खियां मेरे लिए सुपर डीलक्स चैम्बर का निर्माण करेंगे। नोट कर लो मेरी बात।
रात को छज्जूमल बाहर ठंड के मारे अकड़ कर मर जाता है।
डिक्टेटर साहब तो शपथ ग्रहण से पहले ही मर गया।
आजकल ठंड कितनी है। रोज ही कोई न कोई मरता ही रहता है !
सारांश—जो ज्यादा अकड़ता है कभी-कभी वह सचमुच ही अकड़ कर ठंडा हो जाता है !

सुधा गुजराल की दोनों बेटियाँ सुन्दर थीं। बड़ी बेटी पूर्णिमा की अचानक मौत से पति को शक हुआ तो उसने छानबीन के लिए जासूस बलजीत की मदद ली। तभी एक घर में उनकी बेटी की लाश एक टोकरे में पहुंची। उसके बाद एक लड़की का दिन-दहाड़े अपहरण हो गया। तीनों नवविवाहिता थीं। जासूस बलजीत को काला भुजंग आदमी उसकी सेठानी और कार वाली युवती पर सन्देह हुआ। वह दुश्मन के ठिकाने पर पहुंचा तो उसे लाशों के अलावा कुछ हाथ न लगा। जब बलजीत ने दुश्मन को फांसने के लिए जाल बिछाया तो…

'मैं आपके दिमाग की प्रशंसा किए बिना न रह सका।' इन्स्पेक्टर बोला, 'ग्यारह फोटो का हिसाब लगा कर आपने यह ठीक ही सोचा कि सारी हत्याएं अगर यहीं इस शहर में होतीं तो सारे मामले सामने आ जाते।'

'मुरादाबाद की घटना के बारे में आपको क्या मालूम हुआ ?' बलजीत ने पूछा।

'यह डेढ़ साल पहले की बात है। वहां एक विधवा शोभा रस्तोगी के बेटे और बहू निर्जला पर किसी ने रात को हमला किया।'

'हमले में निर्जला बच गई होगी, क्यों ?'

'आपको कैसे मालूम ?' इन्स्पेक्टर ने हैरानी से पूछा।

'यह मेरा अनुमान है इन्स्पेक्टर साहब! दुश्मन को नवविवाहिता दुल्हनों से मतलब था, उनके पतियों से नहीं। दुल्हन हथियाने के लिए अगर उन्हें दो-चार की हत्या भी करनी पड़ती तो वे निस्संकोच कर सकते थे।'

'आपने सही अनुमान लगाया है, बलजीत बाबू! मिसेज शोभा रस्तोगी का बेटा उस हमले में मार डाला गया। निर्जला भी गम्भीर रूप से घायल हुई। वह तीन सप्ताह ही जी सकी।'

'आपका मतलब है कि वह घावों के कारण मर गई ?'

'नहीं-नहीं; उसकी हत्या कर दी गई।'

'यह कैसे मालूम हुआ कि उसकी मौत का कारण हत्या था ?'

'निर्जला की अधजली लाश एक कुएं में से मिली थी।'

'ओह, समझ गया।'

इन्स्पेक्टर बोला, 'मौत से पहले निर्जला ने कुल सात हफ्ते विवाहित जीवन बिताया था।'

'मुरादाबाद में कोई और वारदात भी हुई ?'

'नहीं! लखनऊ में नवविवाहिता दो दुल्हनों, शाहजहांपुर में एक और कानपुर में दो दुल्हनों को मौत के घाट उतारा गया।'

'एक…दो…एक…दो…दो यहां…ये तो कुल हत्याएं हुईं।' बलजीत ने हिसाब लगा कर पूछा, 'बाकी दो कहां मारी गईं ?'

'इलाहाबाद में।'

'बस, फोटो के हिसाब से ग्यारहवीं दुल्हन सरोज बाल-बाल बच गई है।'

'वह कैसे बच गई, यह समझ में नहीं आता।'

'जो भी हो, आपने सचमुच बड़ी उपयोगी जानकारी जुटा ली है।'

इन्स्पेक्टर बोला, 'अब आप बताइए, यह नौजवान यहां कैसे आ मरा ?'

'इन्स्पेक्टर साहब! मेरे विचार में यह अपराधियों के गिरोह का ही एक आदमी है। मेरे पास यह शायद कोई भेद खोलने के लिए आया था। ऐसे आदमी को भयानक हत्यारे जीवित कैसे रहने देते ? हरेक को अपनी जान प्यारी होती है। अगर यह भेद खोल देता तो सब के सब पकड़ लिए जाते। इसी डर से इसे गोली मार कर हमेशा के लिए चुप करा दिया गया।' बलजीत ने समझाया।

तभी एक पुलिस कर्मचारी ऊंची आवाज में बोल उठा, 'इन्स्पेक्टर साहब! इधर आइएगा।'

'क्यों ? क्या बात है ?' इन्स्पेक्टर ने उठते हुए पूछा।

'इस लाश की जेब से एक रिवाल्वर और एक जेवर निकला है।' पुलिस कर्मचारी उत्साह से ऊंची आवाज में बोला।

इन्स्पेक्टर ने उसे डांटा, 'तुम्हें अभी इसकी तलाशी लेने का हुक्म किसने दिया था ?'

पुलिस कर्मचारी झेंप गया।

इन्स्पेक्टर ने लताड़ पिलाते हुए कहा, 'कर्मचन्द! तुम्हारी पुरानी आदत अभी छूटी नहीं ? इसीलिए तुम्हारा तबादला होता रहता है कि तुम अपनी करनी से बाज नहीं आते। मुर्दों की तलाशी में कोई-न-कोई चीज झपट लेने की तुम्हारी लत अब भी नहीं छूटी। लाओ ये चीजें इधर रखो!'

पुलिस कर्मचारी ने दोनों चीजें मेज पर ला धरीं।

बलजीत ने जेवर उठा कर उलट-पलट कर देखा और प्रशंसा किए बिना न रह सका, 'यह बहुत बढ़िया कारीगर का बनाया हुआ कंगन है।'

इन्स्पेक्टर आश्चर्य से बोला, 'मगर यह कंगन इस नौजवान की जेब में कहां से आया ? कंगन तो औरतों के मतलब का जेवर है।'

'यह बताइए कि सरकारी ठेकेदार जीवनदास का फोन नम्बर आपको याद है ?' बलजीत ने पूछा।

'हां।'

'तो आप फोन करके उसे यहां बुलवा लीजिए।'

इन्स्पेक्टर ने जीवनदास के फोन का नम्बर मिलाया और उसे 'चित्रा होटल' में जासूस बलजीत के कमरे में तुरन्त चले आने की प्रार्थना की।

थोड़ी देर में ही जीवनदास कार उड़ाता

आ पहुंचा।

बलजीत उसे लाश के पास ले आया और बोला, 'जीवनदास जी ! जरा इस लाश को पहचानिए।'

जीवनदास ने लाश का चेहरा देखा तो उसकी आंखें फैल गईं। वह बोला, 'यह तो गिरधर द्विवेदी की लाश है।'

'गिरधर कौन ?'

'इसी को तो मैंने अपना बंगला किराए पर दे रखा था जिसे यह चुपचाप छोड़ कर चला गया था। दरी पर खून के धब्बे यही तो छोड़ गया था !' ठेकेदार ने बताया।

'तो सेठानी के साथ आपके बंगले में यही टिका हुआ था ?'

'जी हां। मगर...इसे क्यों मार डाला गया ? किसने इसे कत्ल किया ?' जीवनदास ने हैरानी से पूछा।

'कातिल को ढूंढ़ना बाकी है। आपके इस सहयोग के लिए धन्यवाद !' बलजीत बोला, 'आपको इस समय परेशान करने के लिए हम आपसे क्षमा चाहते हैं। यह जरूरी था, इसीलिए आपको कष्ट देना पड़ा।'

'इसमें कष्ट कैसा, बलजीत बाबू ! जब आप लोग दिन-रात लोगों के कल्याण में लगे रहते हैं तो हमारे दस-बीस मिनट की क्या कीमत है !'

'आप चाहें तो जाकर आराम कीजिए।'

'जब भी आपको मेरी गवाही की जरूरत पड़े, मैं हाजिर हूं।'

'धन्यवाद !'

जीवनदास लौट गया।

पुलिस कर्मचारी अपनी कार्यवाई पूरी करके लाश उठा कर ले गए।

रात के सवा दो बज गए।

'अनिला !' बलजीत ने कहा, 'सुबह तुमने विदेशी पर्यटक हैंडरसन से मिलने जाना है, याद है न ?'

'हां।'

'तो अब सो जाओ और आराम करो।

सवेरे तैयार होकर राजीव और अनिला चले गए। अनिला अलग टैक्सी में थी, राजीव अलग टैक्सी में।

'निशात रेस्तरां' में जाकर अनिला ने देखा कि विदेशी पर्यटक हैंडरसन अपनी पत्नी के साथ अभी नहीं आया था। अनिला ने अपनी कलाई-घड़ी पर निगाह डाली। दस बजने में अभी पांच मिनट रहते थे।

उसने अभी कलाई-घड़ी पर से निगाह हटाई ही थी कि रेस्तरां के लॉन में एक टैक्सी तैरती हुई सी आ खड़ी हुई। उसमें हैंडरसन बैठा था। आज उसने शानदार सूट पहन झांकता रहा। जब-जब उसने देखा, अनिला और हैंडरसन पति-पत्नी को आपस में बातें करते पाया।

आयु सैंतीस-अड़तीस वर्ष के लगभग थी। वह आकर्षक युवती थी। उसकी आंखें नीली थीं और गाल गुलाबी थे। उसने नन्ही-सी कमीज और बैल-बॉटम पेंट पहन रखी थी।

राजीव रेस्तरां से बाहर अपनी टैक्सी से उतर कर कैमरा घुमा रहा था। वह जाहिर यह कर रहा था कि इधर-उधर के फोटो खींच रहा है, मगर वास्तव में वह कैमरानुमा रेडियो-ट्रांसमीटर था।

अनिला ने अपना पर्स झुलाते हुए हैंडरसन की ओर कदम बढ़ाए।

उस समय हैंडरसन टैक्सी का किराया चुका रहा था।

'गुड मॉर्निंग मिस्टर एंड मिसेज हैंडरसन !' अनिला ने कहा।

'गुड मॉर्निंग ! यू आर ए ब्यूटी (तुम साकार सौन्दर्य हो) !' मिसेज हैंडरसन बोली और उसने अनिला के दायें गाल को चूम लिया, 'काश ! तुम मेरे बेटे जैक की पत्नी होतीं।'

'थैंक्यू !' अनिला ने इसमें अपनी शान सी महसूस होने का नाटक किया।

'आइए, जरा अन्दर चलें।' मिस्टर हैंडरसन ने कहा।

यह सारा नजारा राजीव भी देख रहा था। उसके सामने ही अनिला और हैंडरसन पति-पत्नी रेस्तरां में चले गए। राजीव टहलता रहा और बीच-बीच में रेस्तरां में

के लॉन में आकर रुकी।

राजीव ने अनिला और हैंडरसन पति-पत्नी को मेज के पास से उठते हुए देखा। हैंडरसन ने बिल चुकाया। जब बैरा नोट भुना कर लाया तो हैंडरसन ने उसे टिप दी।

राजीव भांप गया कि खाली टैक्सी हैंडरसन ने मंगाई थी। वह तेज-तेज डग भरता रेस्तरां के लॉन से निकला और अपनी टैक्सी के पास आ खड़ा हुआ जो उसने दिन भर के लिए किराए पर ले रखी थी।

हैंडरसन पति-पत्नी और अनिला अभी रेस्तरां के दरवाजे में नहीं पहुंचे थे।

'ड्राइवर !' राजीव ने अपने टैक्सी वाले से कहा, 'टैक्सी जरा सी आगे ले चलो !'

टैक्सी वाले ने कार स्टार्ट की और रेस्तरां के सामने से हटा ली।

कुछ देर में ही हैंडरसन की टैक्सी रेस्तरां के लॉन में से निकली।

राजीव ने देखा कि अनिला टैक्सी में पिछली सीट पर मिसेज हैंडरसन के साथ बैठी थी।

जब उनकी टैक्सी थोड़ी दूर निकल गई तो राजीव की टैक्सी भी उसका पीछा करने लगी। राजीव के दिल में अनिला का मिसेज हैंडरसन के साथ बैठना सदेह पैदा करने लगा। उसे शक यह हुआ कि हैंडरसन कोई विदेशी पर्यटक नहीं था।

टैक्सी जब शाहिदाना रोड पर पहुंची

तो राजीव ने अपना रेडियो-ट्रांसमीटर चालू कर दिया। उसने नन्हे से माइक्रोफ़ोन की ओर मुंह करके पुकारा, 'हलो !...हलो !... राजीव कॉलिंग !'

दूसरी ओर बलजीत ने अपने कमरे में रेडियो-ट्रांसमीटर पर सिग्नल सुने। उसने तुरन्त हाथ बढ़ा कर अपना कैमरानुमा रेडियो-ट्रांसमीटर उठा लिया और माइक्रोफोन पर बोला, 'बलजीत स्पीकिंग...क्यों राजीव, क्या बात है ?'

'बलजीत बाबू ! मैं शाहिदाना रोड से बोल रहा हूं। अनिला इस वक्त मिस्टर हैंडरसन की टैक्सी में है। मेरे मन में शंका उठने लगी है।

'शंका है तो अनिला की टैक्सी को आंखों से ओझल न होने देना ! मैं आ रहा हूं। ट्रांसमीटर मेरे पास रहेगा। तुम मुझे बताते रहना कि अनिला की टैक्सी कहां-कहां से गुजर रही है। तुम अनिला की निगरानी में कोई भूल न कर बैठना !' इतना समझा कर बलजीत ने अपने कक्ष के दरवाजे पर ताला लगाया और तेजी से लिफ्ट की ओर बढ़ा।

बलजीत ने अपनी टैक्सी में रेडियो-ट्रांसमीटर चालू कर रखा था। जब वह शाहिदाना रोड पर पहुंचा तो ट्रांसमीटर में सिग्नल पैदा हुए। बलजीत ने पुकारा, 'हलो राजीव !'

'बलजीत बाबू ! इस समय हम नैनीताल रोड पर हैं।' राजीव की आवाज सुनाई दी, 'आप अपनी टैक्सी की रफ्तार बढ़वाइए और हमारे अपने बीच की दूरी जल्दी से कम कीजिए।'

'ठीक है, मैं रफ़्तार बढ़वा रहा हूं। तुम सन्देश देते रहो। मैं जवाब न भी दूं, तब भी तुम बताते रहना। मेरा ड्राइवर इशारा समझ कर रास्ता पार करता रहेगा।' यह कह कर उसने अपने टैक्सी-चालक से कहा, 'मेरे ट्रांसमीटर पर सन्देश सुनते रहो और जल्दी से मेरे साथी की टैक्सी के पास पहुंचो। रफ्तार जितनी ज्यादा बढ़ा सकते हो, संभल कर बढ़ाते चलो।'

ड्राइवर को बलजीत ने पहले ही इशारा कर दिया था। उसे इनाम देने के साथ-साथ यह भी इशारा कर दिया था कि अगर उसकी टैक्सी को कोई नुकसान पहुंचा तो सारी भरपाई कर दी जाएगी। इसी कारण ड्राइवर ने स्पीड बढ़ानी शुरू कर दी। टैक्सी हवा से बातें करने लगी।

कुछ मिनट बाद राजीव की आवाज आई, 'अब हम मॉडल टाउन में हैं। अनिला की टैक्सी तीसरी लेन में जा रही है।'

'ठीक है, पीछा जारी रखो।' बलजीत ने समझाया।

कुछ पल बाद राजीव की आवाज उभरी, 'मैं मॉडल टाउन की तीसरी लेन के नुक्कड़ पर पहुंच चुका हूं। मैंने अपनी टैक्सी रुकवा दी है।'

'क्यों ?'

'अनिला की टैक्सी भी एक लाल मकान के आगे रुक गई है।'

'अनिला दिखाई दे रही है ?'

'नहीं।'

'क्यों ?'

'वह सीट पर लेटी होगी। हो सकता है कि उसे बेहोश कर दिया गया हो। आप जल्दी से फासला पार कीजिए।'

'मैं पांच-सात मिनट में ही तुम्हें आ मिलूंगा। चिन्ता न करो !' बलजीत बोला, 'यह बताओ कि हैंडरसन कहां है ?'

'टैक्सी के बाहर निकल कर किराया चुका रहा है।'

'उसकी मिसेज कहां है ?'

'वह भी पिछली सीट से उठ कर पति के पास आ खड़ी हुई है। बलजीत बाबू, आप जल्दी से आ जाइए।'

'अनिला टैक्सी में से नहीं निकली ?'

'हैंडरसन उसे टैक्सी में से निकाल रहा है। मिसेज हैंडरसन भी उसकी मदद कर रही है। अनिला सचमुच बेहोश है। बलजीत बाबू, मेरा शक झूठा नहीं था। यह हैंडरसन बड़ा धूर्त आदमी है। लगता है कि यह भी अपराधियों में से एक है।'

'मैं आ रहा हूं, घबराओ नहीं।'

'आप कहें तो मैं हैंडरसन पर हमला कर दूं ?'

'नहीं-नहीं, ऐसी भूल न कर बैठना !'

'कहीं अनिला को ...'

'कुछ नहीं बिगड़ेगा। तुमने गलती कर दी तो जरूर कुछ बिगड़ जाएगा। संयम रखो ! बना-बनाया खेल न बिगाड़ देना !'

'वे लोग अनिला को मकान में ले गए हैं।'

'ठीक है। मेरा इन्तजार करो !'

हैंडरसन और उसकी पत्नी ने अनिला को उसी हालत में अपनी-अपनी तरफ से बगलों में हाथ डाल कर संभाला और मकान के एक कमरे में ले आए। इस कमरे में मशाल की हल्की रोशनी फैल रही थी।

सामने की ओर कमरे में पत्थर का चबूतरा था। यह चबूतरा लम्बाई में था। चबूतरे के पास एक थाली पड़ी थी। थाली में सिन्दूर पुता आटे का दीया धरा था। उस दीये में कापूर की दो डलियां थीं।

हैंडरसन पति-पत्नी ने अनिला को चबूतरे पर आ लिटाया।

इसी क्षण मशाल के पीछे का दरवाजा खुला। उसमें से एक औरत आई जिसने सिर से पांव तक सफेद लिबास पहन रखा था। उसका चेहरा भी लिबास से ढका हुआ था। केवल उसकी आंखें देखी जा सकती थीं। उसने मुड़ कर देखा।

उसके पीछे एक और औरत थी। वह हाथ में मोर-पंखों से बना पंखा लिए हुए थी। पंखे का दस्ता चाँदी का था। उस औरत के बाल भी चाँदी जैसे थे। उसने पंखा सफेद लिबास वाली को दे दिया।

सफेद लिबास वाली ने वह पंखा अनिला पर झुलाना शुरू किया। मुंह-ही-मुंह में वह कुछ जप रही थी। उसने सात बार पंखा झुलाया। इसके बाद पंखा मशाल के पास रख दिया।

'रमणीका ! इस दुल्हन के कपड़े उतारना शुरू करो। आज मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो रही है। यह बारहवीं दुल्हन है। आज मेरा कलेजा ठण्डा हो जाएगा।'

जिस औरत के चाँदी जैसे बाल थे, उसे ही रमणीका के नाम से पुकारा गया था। वह पत्थर के चबूतरे की ओर बढ़ी।

अब सफेद लिबास वाली ने मिस्टर हैंडरसन से कहा, 'जगदेव ! अब तुम कमरे से बाहर चले जाओ !'

जगदेव मुंह मोड़ कर दरवाजे की ओर बढ़ा।

इधर रमणीका ने अनिला की साड़ी खींची।

तभी कदमों की सरसराहट उभरी।

दरवाजे की ओर जाता हुआ जगदेव ठिठक-सा गया।

सामने राजीव और बलजीत खड़े थे। उनके हाथों में रिवाल्वर थे।

'खबरदार, जो किसी ने हरकत की।' बलजीत की गरज सुनाई दी।

लेकिन उसी क्षण तीन आदमी हरकत में आ चुके थे।

शेष पृष्ठ ३८ पर

लो वोल्लो हद्द हो गयी! आजकल तो टैस्ट मैच खेलने के लिये खडारियों को इतनी तैयारी नहीं करनी पड़ती जितनी कमेन्ट्री सुनने वालों को करनी पड़ती है। यस सर, कमेन्ट्री सुनना इज वैरी कम्पलीकेटेड बिजनैस दीज डेज।

इस चूहे ने ऐन मौके पर हमें चेतावनी दे दी वरना हम तो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते। रोज आकर हम यहां रक्त दान किया करेंगे।

जैसे पानी की टंकी में पानी ही नहीं होगा तो टूटी में पानी प्रैशर से कैसे आयेगा। जब बांस ही नहीं होगा तो बंसरी कैसे बजेगी?

रोज खून देने से कमजोरी तो नहीं आयेगी?

आयेगी तो क्या? तने कौन-सी मेहरदीन से कुश्ती लड़नी है।

इब भाई जी ब्लड वाली बात तो समझ में आ गयी, लेकिन सवेरे-सवेरे उठा कर सहर के बाहर लाकर गोड़े क्यों तुड़वा रहे हो?

बेवकूफ, सुबह की लम्बी दौड़ और सैर दिल की बीमारियों के लिये अच्छी है।
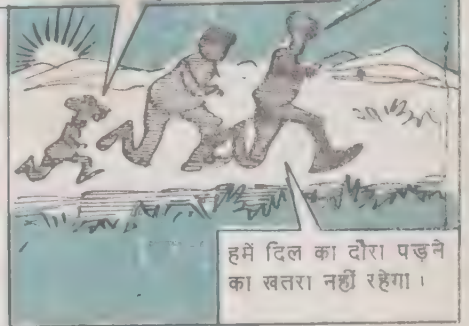
हमें दिल का दौरा पड़ने का खतरा नहीं रहेगा।

यह लोग इस तरह दौड़ कर कहां जा रहे हैं ? पूछ कर देखना चाहिये।
बाबू साहब, क्या कोई गुंडा थमारे पीछे पड़ा है ? इस तरह क्यों भाग रिये हो ?
हम किरकट वाले हैं किरकट।
गिरगट ? इन शहर वालों को क्या हो गया है कभी बन्दर पकड़ने वाले आते हैं कभी लंगूर पकड़ने वाले। अब यह गिरगट पकड़ने वाले...

इधर से दो जेब कतरे तो नहीं गुजरे ? शहर में उत्पात मचा कर दो जेब कतरे इस तरफ ही भाग आये थे।
जेब कतरे तो नहीं हवलदार साहब, हां दो गिरगट वाले जरूर इधर से दौड़ कर कुछ देर पहले गए हैं। मैंने उनमें से एक से पूछा तो उसने बताया हम गिरगट वाले हैं
वहीं होंगे, वही होंगे, वह जेब कतरे ! जेब कतरों को गिरहकट भी कहते हैं। तुमने गिरगट गलत सुना होगा।
ऐसा ही होगा साहब।
POLICE

पुलिस जीप उधर दौड़ पड़ती है।
WEEEEE
जल्दी करो ड्राइवर।
POL

Who are you ? What are you people doing here ?
हम क्रिकेट वाले हैं जी। क्रिकेट की खातिर ही दौड़ लगा रहे हैं इधर।
You too ! आप लोग भी क्रिकेट का दीवाना है हम भी।

आप भी क्रिकेट फैन सर ? वेरी गुड मीट यू—थैंक यू वेरी मच।
Of course I am also a cricket fan. I am a biology profesor Cricket is most wonderful insect.

यो बुड्ढा क्या कह रिया है ? यह टिड्डा किरकट का खिलाड़ी है ? ऐसी बात मने आज तक नहीं सुनी।
हो सकता है भाई, यो अपने को वोत वड़ा प्रोफेसर वता रिया है। जनावर लोगों ने भी इव क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया होगा। इसकी टांगें देख टोनी ग्रेग की तरह लम्बी हैं। जरूर यह अपनी टीम का आॅल राउंडर होगा।
इज ही आल राउंडर सर ?
I've just captured a member of tne finest species of cricket. It is called Eurycantha Indicum Tiddicus.
Fair Guess. I must admit it is allrounder in many ways. It can fly, it can hop, it can walk and may be it creeps too.

इतने में पुलिस पहुंच जाती है।
हैंडस अप।
POLICE

कोई चालाकी दिखाने की कोशिश न करना। इन्सपेक्टर दुग्गल जीप से ही तुम्हें मशीनगन से कवर किये हुए हैं।
Officer, whats the matter ? thought they were nice fellows investigating insect life !
होलदार जी, हम सीधे-सादे आदमी हैं, आपको गलती लगी है।
No sir, Infact, they are very dangerous highway robbers Criminals.
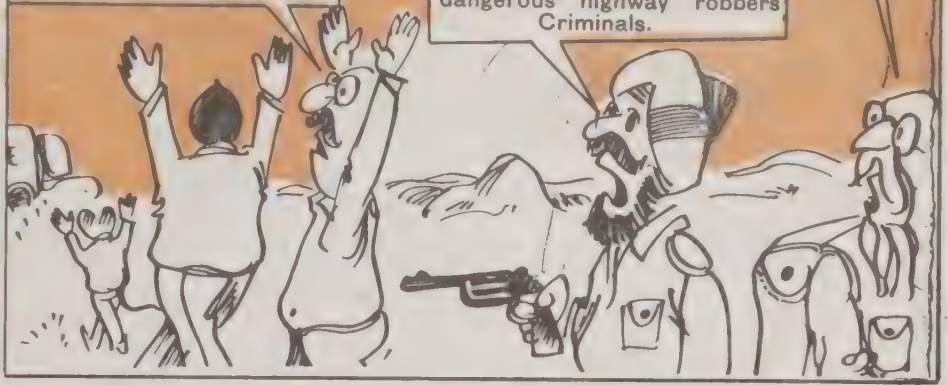
यो क्या कबाड़ा हो गिया ? बड़ी मुश्किल से पचास रुपये देकर पीछा छुड़ाया हमने।

पुलिस स्टेशन
POLICE STATION
हमको जेबकतरे कहने लगे।

हमको इस मुसीबत में किसने फंसाया ?
इस नमक हराम चूहे ने। न यह लम्बी दौड़ की थ्योरी हमें बताता न हम इस मुसीबत में फंसते। भाई जी देख क्या रिये हो ?
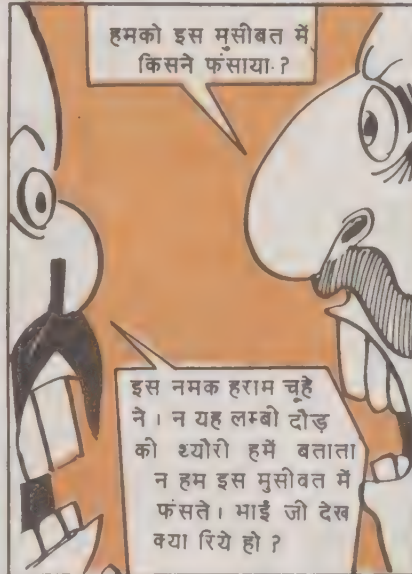
आज हम इस चूहे की छुट्टी किये बिना नहीं मानेंगे। इसके ऊपर मसाला छिड़क कर काली बिल्ली के सामने परोस देंगे या चिड़ियाघर के कोबरा सांप को घर खाने पर बुलायेंगे।
GRRRR

हाथ में नहीं आया, इस बिल में घुस गया।

लकड़ियां इकट्ठी करके इस छेद के पास आग जलाओ। धुयें से यह अपने आप मर जायेगा।
धुयें का क्या असर होगा ? मुझे तो यह छेद बहुत गहरा मालूम होता है। हो सकता है सीवर की नाली से जा मिलता हो।
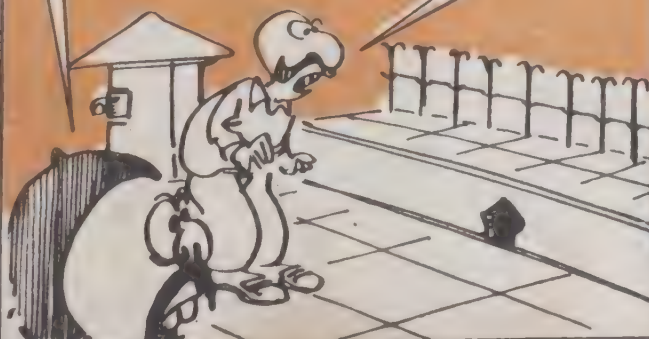
मुझे अपने ऊपर इतना गुस्सा आ रहा है कि ऐसे चार सौ बीस चूहे को हम पालते ही क्यों रहे ? दिल करता है अपने सिर पर पत्थर मारूं।
टैस्ट मैच में जब म्हारे फील्डर कैच ड्राप करेंगे तब भी थमारा दिल सिर पर ईंट मारने को करेगा। अपना सिर बचाने के लिये थम एक-एक हैलमेट खरीद लो।
हैलमेट वाली बात तो ठीक कही इसने भाई। पिछले टैस्ट में अपने चार बाल इसी तरह नोच डाले थे मैंने निकल आ चूहे माफ किया तुझे।

इब के हमने तुझे छोड़ दिया, हेलमेट की बात पर तुझे दस नम्बर दे दिये। वाकई हम हैलमेट खरीदेंगे। अपने ही गुस्से से रक्षा होगी। पिछली बार जो चार बाल मैंने उखाड़े उसके बाद नाम को भी मेरी खोपड़ी पर एक भी बाल नहीं आया।
थैंक यू सर।
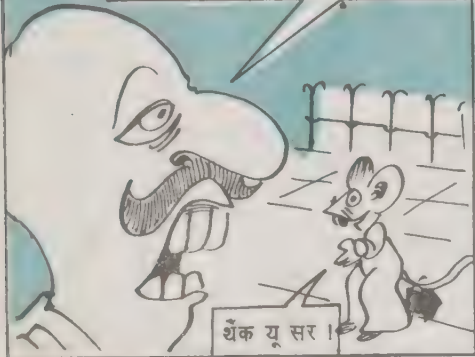
अब हम घूमने बाहर भी नहीं जायेंगे। कसरत का सामान खरीद कर ले जाते हैं इस स्पोर्टस सेन्टर से। अपने ही घर में चैन से एक्सरसाइज करेंगे।
SPOR
CENT

एक तो थम दोनों बुलवर्कर ले लो। बुलवर्कर पांच मिनट रोजाना करने से जिम रिव्स की तरह देह बनेगी। छाती और फेफड़े खोलने के लिए एक चैस्ट एक्सपेन्डर खरीद लो।

पैशा तो काफी लग गया। तकरीबन जितने म्हारे पास थे वह सारे पैसे खप गये। किसी खास काम के लिये मैंने वह पैसे रखे थे। पता नहीं कौन-सा काम था? खैर, यह भी तो बोत जरूरी काम था। पैसे एडवांस दे दिये हैं, हैलमेट भी कल तक हमको मिल जायेंगे। आज उसके पास नहीं थे।
कल ली आयेंगे।
BULLWORKER
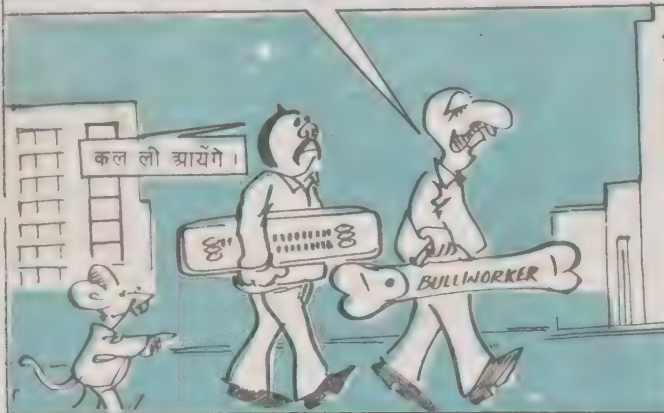
अरे साहब आप कौन हैं? हमारे घर के पास क्या कर रहे हैं।
मैं बिजली विभाग का हूं। आपकी बिजली कट गई है। आपने अपना बिल जमा नहीं करवाया।

पत्थर पड़ गए मेरी गंजी खोपड़ी पां। अरे जिस पैसे से हम यह सारा माल खरीद लाये। वह वही पैसे तो थे जो बिजली के बिल के लिये रखे थे। इब हमारा एफ० एम० फैराइट रॉड ऐरियल वाला फोर बैंड २५ और ३१ मीटर बैंड स्प्रैड सुपर हाई-फाई मैजिक आई डबल स्पीकर रेडियो भी ठंडा हो गिया। बगैर बिजली के यह कमांट्री तो क्या मंडी के भाव भी नहीं सुना सकेगा। हमारा बुलवर्कर, चैस्ट एक्सपैंडर और सुपर लाइट फाइबर हैलमेट भी किस काम के रह गये?
इंडियन पीनल कोड से अभी फासी की सजा हटी नहीं है।

बन्द करो बकवास

थोड़ा रुक जाएगी तो तेरा क्या जाएगा।

बन्द करो वकवास तुम्हें भी फोन पर वात करनी है तो घण्टा भर रुको, वर्ना टेलीग्राम से काम चलाओ।

यह दिल तुम विन कहीं लगता नहीं हम क्या करें

वन्द करो वकवास, मां के बिना तुम्हारा दिल नहीं लगता तो तुम हनीमून पर आये ही क्यों ?

आसू भरी हैं ये जीवन की राहें।

बन्द करो बकवास, धर्मेन्द्र की पिक्चर देखने के लिए मुँह पर के मुंहासों का ठीक होना जरूरी नहीं। उसे स्क्रीन से दिखाई नहीं देगा।

दीवाली विशेषांक दीवाना एक अलग ढंग से प्रकाशित हुआ । इसकी साज-सज्जा देखकर मन खुशहाली से भर उठा । यह अंक शृंगार एवं हास्य से भरपूर था । लक्ष्मी के रूप में आपने हमें बीस रुपए का नोट सोगात के रूप में दिया, उसके लिए धन्यवाद ! चिल्ली लीला में चिल्ली की चतुराई को देख कर हँसे बिना नहीं रह सका । नई-नई दीवाली के दीवाने रूप प्रशंसनीय थे । चिल्ली द्वारा लिखित लक्ष्मी देवी को प्रेम पत्र पढ़कर यूं प्रतीत हुआ कि वह छोटे-बड़े को एक ही दृष्टि से देखता है । धारावाहिक जासूसी कहानी 'आखिरी चीख' भी दिलचस्प है । इसके अलावा पत्रिका के सभी स्तम्भ आसमान को छू रहे हैं कृपया अभिनेता अमिताभ बच्चन पर लेख छापें ।

कृष्णराज गिरी 'नवीन'—दुलियाजान

दीवाना के लिए दीवाना हो गया । एक रुपए में अच्छा मनोरंजन हो गया । अंक ४२ वां प्राप्त हुआ । मुख पृष्ठ सलीम जावेद कृत रामलीला, पिलपिल सिलबिल, मोटू पतलू का जहाज हाईजैक काफी जानदार रहे । शरद जोशी का व्यंग्य मजेदार रहा । 'दीवाना' की आश्चर्यजनक प्रगति देख कर ऐसा लगता है कि यह हमें हंसा-हंसाकर दारा सिंह बना देगा । बधाई स्वीकार करें ।

पुनीत श्रीवास्तव—दमोह

'दीवाना' पढ़ने का मुझे बीस साल का तजुर्बा है । 'दीवाली विशेषांक' देर से मिला । तारीफ करूं क्या उसकी, जिसने उसे (दीवाना) बनाया । मेरा सुझाव है कि धारावाहिक कहानियाँ (उपन्यास) न दिया करें, इससे खासी बोरियत होती है । मोटू-पतलू, स्तम्भ हंसोड़ बनाने की कोशिश करें न कि गम्भीर ।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी 'उषा'—विक्रमगंज

मैं दीवाना का छः वर्षों से नियमित पाठक हूं । यह लिखते समय मैं अपनी 'बैंक' की हिस्ट्री पर भी नजर डाल रहा हूं । इस लम्बे समय में दीवाना में कई स्तम्भ आए और चले गए परन्तु बन्द करो बकवास, दीवाना कार्ड व फिल्म पैरोडी इतने पसन्द आए कि पूछिए मत ! परन्तु १ सितम्बर १९७७ के बाद फिल्म पैरोडी दिखाई नहीं दी है । क्या कारण है ?

रमेश चन्द, देवानन्द—जमोली

आपके पत्र

दीवाना का अंक नं. ४३ मिला । पढ़कर करंट सा लगा । ऐसा लगा जैसे नंगा तार छू लिया हो । चिल्ली के दिल से मेरे दिल का कनेक्शन बहुत पुराना है और अब तो मेरा जीवन रूपी पंखा तभी तक चल सकता है । जब तक इसे चिल्ली रेगूलेटर बन कर चलाता रहे । आशा करता हूं कि दीवाना का सेहत का बल्ब इसी तरह पूरे वोल्टेज से जलता रहेगा । लेकिन इसमें कभी-कभी 'मेरी नयी प्रेयसी दाढ़ी जैसी कहानियां आ जाने से वोल्टेज कम हो जाती है और लाईट फीकी पड़ जाती है ।

रेहाना कमर—अलीगढ़

मैं दीवाना का साप्ताहिक पाठक हूं । दीवाना का ४४ वां अंक बस स्टेंड पर कई चक्कर लगाने पर प्राप्त हुआ । फिल्मी सितारों की दीवाली, मदहोश, बन्द करो बकवास, छुट्टन-मिट्ठन, बहुत पसन्द आए । 'आखिरी चीख' काफी रोचक है । वास्तव में दीवाना अद्वितीय हास्य पत्रिका है ।

नरेश कुमार आर्य—मेरठ

दीवाना का अंक ४४ प्राप्त हुआ और साथ में दीवाली उपहार भी प्राप्त हुआ । मुख पृष्ठ सदा की तरह आकर्षक एवं मनोरंजक था । फिल्मी सितारे दीवाली ऐसे मनायें, इस अंक का मुख्य आकर्षक लगा । 'दीवाली पर किसको क्या बख्शीश दें' मनोरंजक एवं जानकारी पूर्ण था । 'मदहोश' स्तम्भ बेहद पसन्द आ रहा है ।

हंसराज गेरा—रिवाड़ी

बहुत इंतजार के बाद जब जेब में कड़की थी, तब चिल्ली महाराज ने अंक ४४ के जरिए २० रु० का नोट हाथ में थमा दिया । 'दीवाना' के दीवाने तथा चिल्लो के चेले की तबीयत हरी हो गई । दीवाना कार्ड, प्रेम-पत्र रोचक लगे ।

गोपीचन्द आहूजा—उल्हासनगर

दीवाली विशेषांक का रोम-रोम सुशोभित था । सभी स्तंभ लाजवाब थे । दीवाना का मैं हर सप्ताह बड़ी बेसब्री से इन्तजार करता हूं । दीवाना की प्रशंसा करते मुंह नहीं थकता । क्योंकि दीवाना मेरे लिए ज्ञान-विज्ञान, हास्य-व्यंग्य आदि सभी चीजों को दर्शाता है ।

रवि रंजन—सासाराम

दीवाली के दिन लक्ष्मी जी की पूजा करने के बाद घूमने के लिए बाजार की ओर चल पड़ा । जैसे ही बस स्टेंड की तरफ पहुंचा तो 'रोडवेज बुक स्टाल' पर दीवाना का 'दीवाली विशेषांक' बीस के कड़कड़ाते नोट के साथ फड़कते हुए पाया । झटपट पांच का नोट निकाल कर बीस-बीस के नोटों के चक्कर में एक साथ पांच अंक खरीद लिए । सोचा लक्ष्मी जी की पूजा यूं ही व्यर्थ नहीं जाएगी । इसलिए ही हाथों-हाथ पांच के बदले सौ रुपए मिल रहे हैं । खैर एक-साथ पांच अंक लेकर हम सरपट घर की ओर दौड़ पड़े और घर जाकर इस अंधेरे कोने में पांचों नोट फाड़कर झटपट जेब में ठूंस लिए । बाद में जब एक हलवाई को वह नोट पकड़ाया तो उसने दीवाली के दिन हमारी जो दुर्गति की वो हम ही जानते हैं ।

भगवानदास गोकलानी—ब्यावर

दीवाना का अंक ४५ मिला । मुखपृष्ठ को देखकर बड़ी हँसी आई कि चिल्ली भी अपनी प्रेमिका से प्रेम करता है । चिल्ली लीला, दीवानी चिपकी, काका के कारतूस आदि बेहद रोचक लगे । मोटू पतलू, का तो कहना ही क्या । ये तो सबसे अच्छे लगे । इस बार फिल्म टाइम्स भी अच्छा रहा । अर्थ-अनर्थ, चना कुरमुरा, और खेल-खेल में भी पसन्द आए । परन्तु इसमें आप रंग भरो प्रतियोगिता को महीने में एक बार देने की बजाय दो बार दिया करें । मुझे दीवाना बेहद पसन्द है । इसलिए मैं कामना करता हूं कि दीवाना दिन पर दिन उन्नति करे तथा हमारा मनोरंजन करता रहे ।

संजीव कुमार—नई दिल्ली
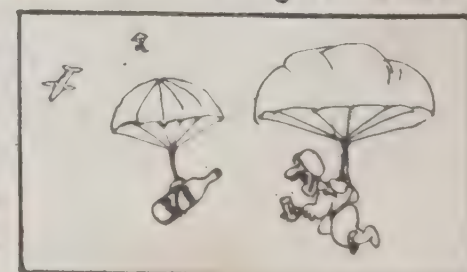
मोटू पतलू

मोटू-पतलू ने तीन आदमियों को एक आदमी की जान लेते देखा तो यह बात उनके अपने लिये जानलेवा बन गई। मोटू-पतलू उनसे जान बचाते-बचाते एक पानी के जहाज पर पहुंचे तो तीनों हत्यारे वहां भी उनके पीछे लगे हुए थे और पारस मणी की खोज में घसीटाराम उनका मित्र बन गया था। उसी जहाज पर नसीर उल्ला और बशीर उल्ला नाम के दो तेल सम्राट सफर कर रहे थे। मोटू पतलू ने हत्यारों से छुपने के लिये भेस बदला तो 'ओवरसीज एजेंसी' के दो तेल एजेंटों ने उन पर डोरे डालने शुरू कर दिये। और असली नसीर उल्ला और बशीर उल्ला को भेस बदला हुआ मोटू पतलू समझ कर तीन हत्यारों ने पकड़ लिया था, इसके बाद की दीवानगी आगे देखिये।
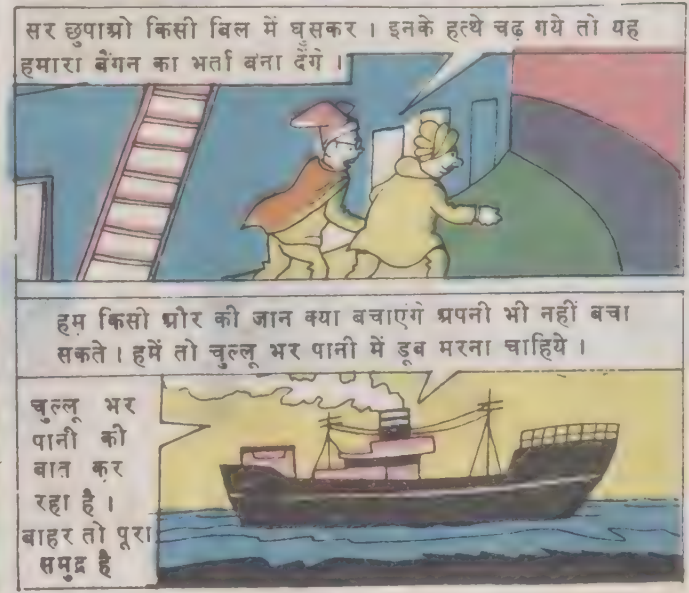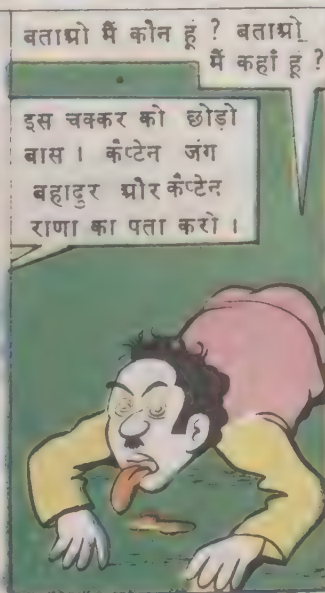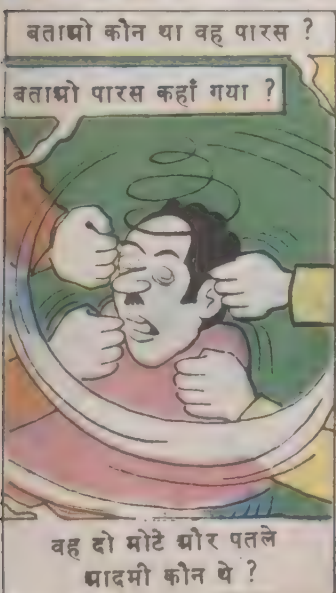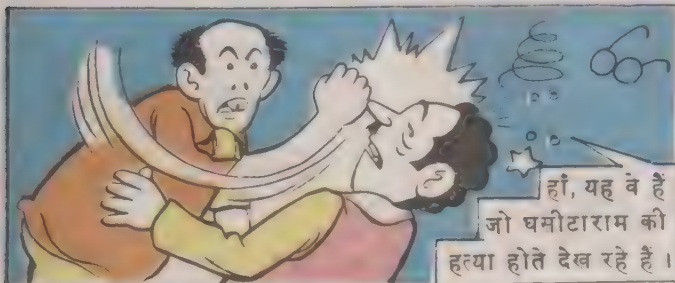
हो सकता है कैप्टेन जंग बहादुर को पारस के बारे में कुछ मालूम हो।
उसके पास तो हमारा पीछा करने वाले हर आदमी की लिस्ट होगी।
कैप्टेन दिलावर तो अच्छा आदमी था। कैप्टेन जंग बहादुर और राणा का पता नहीं।

हमें कोई कपड़े बदलने का शौक नहीं है। किसी तरह जान तो बचे हमारी।
ऐसा न हो किसी नई मुसीबत में फंस जाएं। पता नहीं हम किसके केबिन में घुस गये हैं और हमने किसके कपड़े पहन लिये हैं।

केबल पर यह मेसेज देना है कैप्टेन जंग बहादुर कि हम मद्रास से फ्यूल लेंगे।
आल राइट मेज पर रख दो।

और आपसे स्पीड बढ़ाने को कहा गया है। कैप्टेन राणा।
आल राइट।
मैं कैप्टेन जंग बहादुर और यह कैप्टेन राणा।

कुछ अजीब से लगते हैं दोनों, पर मुझे क्या।
के० जंग बहादुर
हाँ, यही केबिन है।

क्या हम अन्दर आ सकते हैं?
अब कौन आ मरा!
आइये-आइये।

अललटप्पू तिगड़म लगा रहा हूं। पर सब सही बैठ रहा है। लगता है इनका कोई खतरनाक गैंग है।

पर एक चक्कर है कैप्टेन। पुलिस का एक जासूस हमारे पीछे लगा है।

उसका नाम है पारस ।
जी हाँ, पारस । आपको कैसे पता ?
कैप्टेन जंग बहादुर और कैप्टेन राणा को क्या मालूम नहीं है ? हमारे गैंग में क्या ऐसे वैसे आदमी लिये जाते हैं ।

पारस को मारकूट कर पकड़ तो लिया था तुमने ।
आपको यह भी मालूम है ?
इतने बड़े बास यूं ही तो नहीं बनाए गये हैं यह हमारे गैंग के ।
क्या उसने कुछ नहीं बताया हमारे बारे में । उसने ''उसने''

लाल रुमाल ने ? सब कुछ बता दिया था लाल रुमाल ने ।
आखिरी बार कब मिला था ?
तो इनके बास का नाम लाल रुमाल है ।

जब हम बम्बई से चले थे । हमारे साथ ही वह दूसरे जहाज से अदन चला गया । उसके साथ छोटा बास भी था ।
रांग नम्बर ।
तो दूसरे बास का नाम रांग नम्बर है । और इनका अड्डा है बम्बई में ।

यह अटैचीकेस, सम्भाल लीजिये । इसमें पांच पैकेट हैं ।
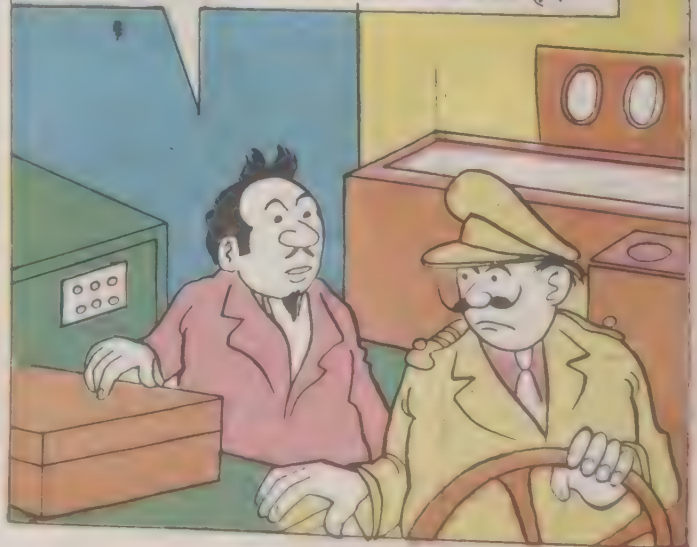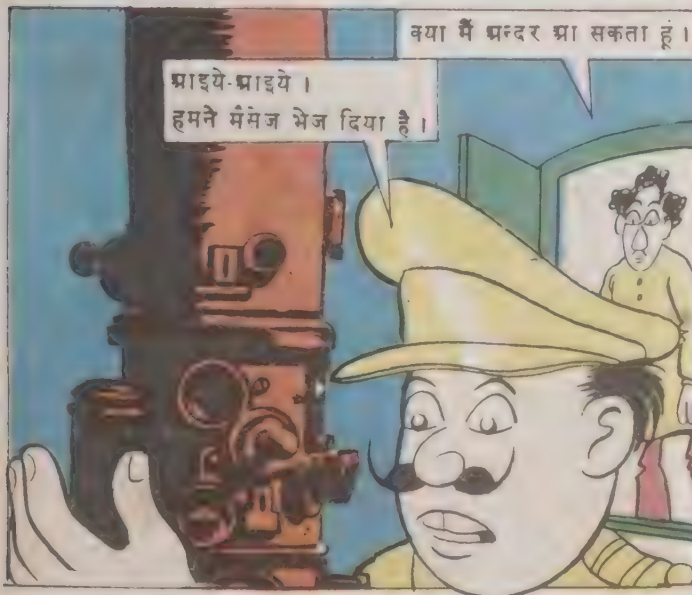
कैप्टेन वह मैसेज दे दिया ?
एक आदमी आपसे मिलना चाहता है ।
दे दिया ।
भेज दो ।

पता नहीं कौन है । अटैची छुपा दो । हम जाते हैं ।
फिर आयेंगे ।

क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ।
आइये-आइये ।
हमने मैसेज भेज दिया है ।

कहाँ भेज रहे हो मैसेज । वहां तो रंगे हाथों पकड़ा गया ।
क्या कह रहे हो ?
क्या नाम है तुम्हारा ?

कैप्टेन जंग बहादुर और कैप्टेन राणा ।
अब मेरा नाम पूछो । मेरा नाम है पारस ।

पारस
हां पारस । जान निकल गई क्या मेरा नाम सुनकर ?
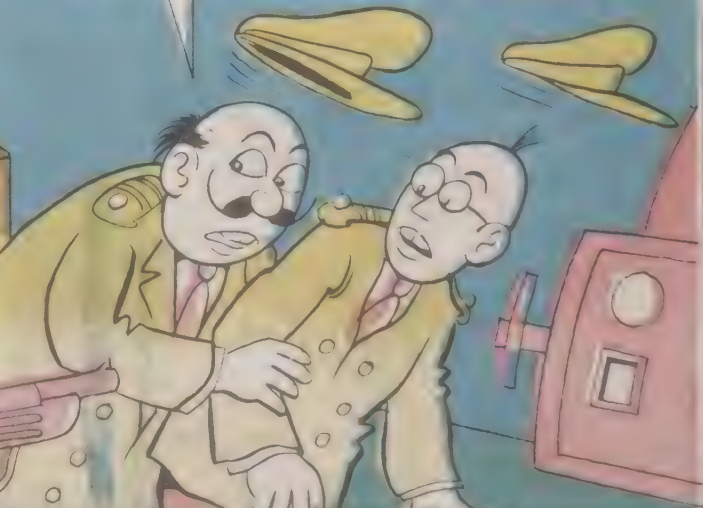
इन जोकरों की दीवानगियां देखने के लिए इस दीवाना के इन्हीं पृष्ठों पर अगले सप्ताह फिर मिलिये

छुट्टन और मिट्ठन

ज्योतिषी
आचार्य छुट्टन और मिट्ठन
अपनी किस्मत का हाल हम से पूछिये।

संसार का सबसे आसान काम है किताबें पढ़कर ज्योतिषी बनना।

बस राशिफल ही तो याद करने हैं। यह तो वह धंधा है, जिसमें हींग लगे न फिटकरी और रंग आए चोखा।

बड़े-बड़े VIP (अण्डर वीयर बनियान) हम से अपनी भविष्यवाणी की आकाशवाणी कराते हैं।
किशोर कुमार के गाने क्यों बन्द हुए? जीनत अमान किस के घर की जीनत बनेगी? भारतीय क्रिकेट टीम कब पंजे झाड़कर पीछे पड़ेगी और उसके चौक्के कब आस्ट्रेलिया के छक्के छुड़ायेगी? यूथ कांग्रेस बूढ़ी क्यों हुई? 'जनता पार्टी जिन्दाबाद' का नारा कब लगेगा? मीसा ने किसको पीसा?
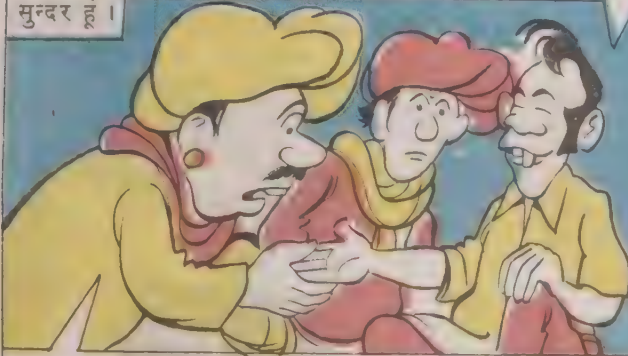
यही तो मैं आपसे पूछने वाला था महाराज। आपको देने के लिए मेरे पास पांच रुपये कब और कहां से आयेंगे?

गई भैंस पानी में। पहला ग्राहक भेजा वह भी कंगाल।

और जया भादुड़ी कब मिलेगी?

जब भाड़ में जाने को जी करेगा
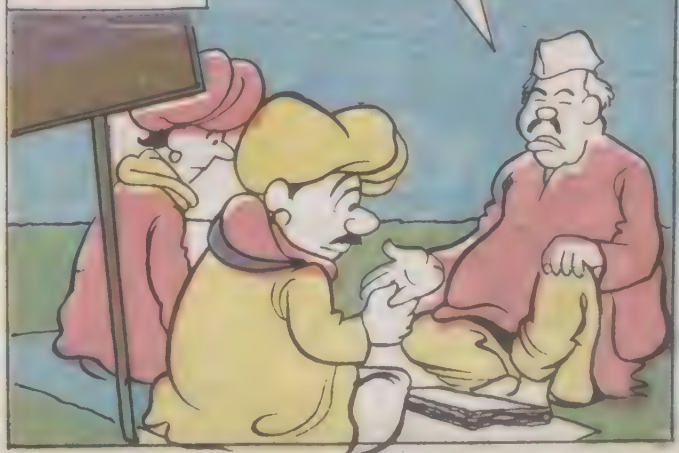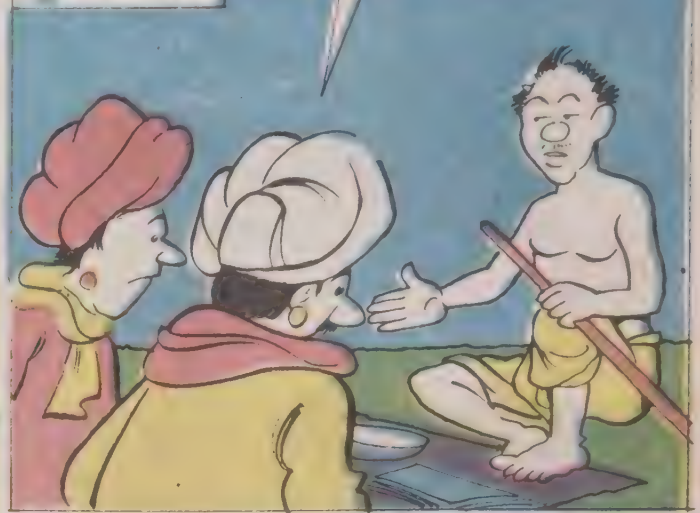
मन की आंखें खुलने से पहले ही गठड़ी में लागा चोर सब कुछ ले गया ।

लोगों की रेखाओं से उनका भाग्य देखने की बजाय अपना दुर्भाग्य देखो ।
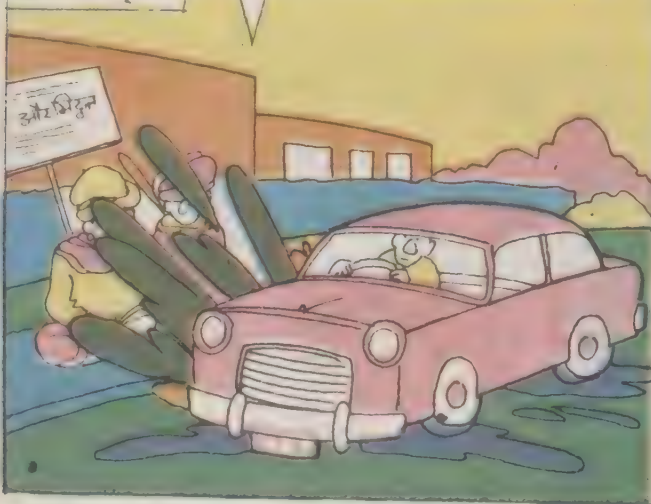
अगले सप्ताह छुट्टन और मिट्ठन से फिर मिलिये । और इनकी दीवानगी के बारे में अपनी राय अवश्य दीजिये ।

प्र० : दर्द क्या है, यह कैसे होता है ?

रमेश चन्द्र शर्मा—हसनपुर जागीर

उ० : क्या कभी आपकी इच्छा होती है कि आपको दर्द अनुभव न हो ? परन्तु वास्तव में आप भाग्यवान हैं कि दर्द का अनुभव करते हैं। क्योंकि ये हमारी भयकर हानि से रक्षा करता है। जैसे यदि हमें दांत का दर्द अनुभव न होता तो हम कभी उसकी समय से देखभाल न करते और उन्हें खो देते। इसी प्रकार गर्म वस्तु को छूने से दर्द अनुभव होने पर, हम अपने शरीर को गम्भीर हानि पहुंचा सकते थे। कुछ लोग एक प्रकार के रोग जिसे 'सिरोन्योमाइलिया' कहते हैं, से पीड़ित होते हैं। इस रोग के रोगी को कई प्रकार के दर्दों का अनुभव नहीं होता। फलस्वरूप रोगी अपने शरीर को बहुत हानि पहुंचा लेते हैं। जैसे किसी घाव की देखभाल न कर उसे भयंकर रूप धारण करने देते हैं इत्यादि। कारण उन्हें उस घाव में दर्द का अनुभव नहीं हुआ, अन्यथा वे इससे बच जाते।

दर्द क्यों होता है, इसका सन्तोषजनक उत्तर अभी तक विज्ञान के पास नहीं है। परन्तु माना जाता है कि त्वचा में नसों के सिरों से ही दर्द अनुभव होता है। तीव्र उद्दीपन होने पर ही दर्द अनुभव होता है, जैसे बहुत गर्म वस्तु में अणु तीव्रता से हिलते हैं, यही कारण है कि उसे छूने से हम दर्द अनुभव करते हैं। जहां तक हमें पता है दर्द की कोई विशेष नसें नहीं हैं, फिर भी जहां भी दर्द की तरंगें जाती हैं, कोई न कोई विशेष नस उसे मेरुरज्जु (Spinal Cord) से मस्तिष्क तक अवश्य पहुंचाती है। जिन स्थानों से दर्द अनुभव करने वाली नसें जाती हैं, उन्हें दर्द स्थान कहते हैं। ये शरीर की त्वचा में एकसार फैले नहीं होते। शरीर में कई स्थान ऐसे भी हैं जहां दर्द स्थान बिल्कुल नहीं होते। शरीर की त्वचा पर लगभग ३,०००,००० दर्द स्थान हैं।

दर्द कई प्रकार के होते हैं, जैसे जलन, काटने के समान, बेधने जैसा। इसलिए कहा जा सकता है कि जो हम अनुभव करते हैं वो कई प्रकार की अनुभूति हैं। इनमें बाह्य दबाव तथा तापमान भी सम्मिलित हैं। इसलिए दर्द को अप्रिय अनुभूतियों का मिश्रण कह सकते हैं।

****

प्र० : क्या कोई मछली उड़ भी सकती है ?

सुरेन्द्र शर्मा निर्शांत—जबलपुर

उ० : उड़ने वाली मछलियां बहुत कम पाई जाती हैं। वास्तव में ये भी उड़ती नहीं हैं एक प्रकार से हवा में तैरती सी हैं। देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि ये उड़ रही हैं। ये मछलियां बहुत तेजी से पानी में तैरकर ऊपर को उछलती हैं और हवा में तैरती

प्रतीत होती हैं क्योंकि इनकी छलांग काफी लम्बी होती है, ये हवा में उड़ती प्रतीत होती हैं, उड़ते समय ये अपने मीन पक्षों को फैला लेती हैं। इस प्रकार की मछलियों में दक्षिणी अमरीका में मिलने वाली हैचर मछली भी है। ये मछली पांच सेन्टीमीटर लम्बी होती है और अपने छोटे शरीर के कारण एक मीटर तथा इससे अधिक दूरी भी, एक ही छलांग में पार कर लेती है।

****

प्र० : पत्तों के हरे होने का क्या कारण है, तथा इसके क्या लाभ हैं ?

गुलशन पामर—मुक्तसर

उ० : यदि हम जीव जन्तुओं तथा पौधों का कोई महत्वपूर्ण अन्तर देखें, तो पौधों का हरापन मुख्य प्रतीत होगा। यूं तो कोई-कोई पौधे तो हरे नहीं होते परन्तु उनका मूल नियम इनका हरापन ही है।

पौधों को उनका हरापन क्लोरोफिल नामक तत्व से प्राप्त होता है। संसार में क्लोरोफिल का बड़ा महत्व है, क्योंकि ये ही एक ऐसा तत्व है जो हवा और मिट्टी से तत्व लेकर उन्हें जीवित खाद्य पदार्थों में निर्मित करता है। यदि पौधे ये कार्य न कर पाते तो मनुष्य अथवा जीव-जन्तुओं का जीवित रहना असम्भव था, क्योंकि उन्हें कोई खाना प्राप्त नहीं होता। मांसाहारी पशु-पक्षी भी भोजन के लिए शाकाहारी पशु-पक्षियों पर निर्भर हैं। असल में आप हर प्रकार के खाद्य पदार्थ का मूल निर्माण कारण एक पौधा ही पायेंगे।

इस प्रकार पौधों का हरा तत्व क्लोरोफिल हमारे जीवन का आधार है। क्लोरोफिल पौधे में पत्तों के कोषाणुओं तथा तने और फूल में भी होता है। क्लोरोफिल की सहायता से पौधा धूप से ऊर्जा एकत्रित करके उसे जीवन प्रदान करने वाले रसायनों में बदलता है। जिन पौधों में क्लोरोफिल नहीं होता वे अपना भोजन स्वयं नहीं बना पाते तथा दूसरे पौधों व जीवों पर निर्भर रहते हैं। क्लोरोफिल को पौधों से अर्क के रूप में निकाला जाता है। ये बहुत प्रकार के कीटाणुओं का नाश करने में सहायक होता है।

****

प्र० : यदि किसी राड का कुछ भाग पानी में डूबा हुआ हो, तो डूबा हुआ भाग टेढ़ा दिखाई पड़ता है, क्यों ?

सतीश कुमार—कानपुर

करम सिंह—शिवपुरी

उ० : प्रकाश की किरण जब किसी गहरे माध्यम से शुरू होकर, हल्के माध्यम से गुजरती है, तो वह सामान्य से मुड़ जाती है। इसी प्रकार हल्के माध्यम से गहरे माध्यम की ओर जाने पर सामान्य की ओर प्रकाश किरण आती हैं। जब एक रॉड को पानी में डुबाया जाता है, तो प्रकाश किरण डूबे हुए भाग से चलकर पानी से बाहर हवा की ओर आती हैं, क्योंकि पानी हवा से गहरा माध्यम है, प्रकाश सामान्य से बाहर की ओर को फैलता जाता है। इसलिए देखने पर प्रकाश की किरण के कारण रॉड अपने वास्तविक स्थान से ऊपर दिखाई देती है। और पानी में डूबा रॉड का भाग ऊपर को उठ जाता है। अब हम सारी रॉड को साथ देखने पर बाहर के भाग की तुलना में डूबा भाग टेढ़ा महसूस करते हैं। यही कारण है कि तालाबों और झीलों की गहराई भी वास्तविक से कम प्रतीत होती है।

****

क्यों और कैसे ?

दीवाना साप्ताहिक

८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,

नई दिल्ली-११०००२

कुलदीप वर्मा—लुधियाना

प्र० : कृपया पाकिस्तान के सलामी बल्लेबाज मजीद खान का टैस्ट रिकार्ड बताइये।

उ० : मजीद खाँ ने ३७ टैस्टों में २६५१ रन बनाए हैं उच्चतम स्कोर वेस्ट-इंडीज के विरुद्ध १६७ रहा उनके नाम पर ५ शतक व १३ अर्ध शतक हैं इसके अलावा मजिद ने ४४.४१ रन की दर से २४ विकटें भी ली हैं।

संजीव जैन—बीना

प्र० : महोदय जी, भारत में सबसे लोकप्रिय खेल कौन सा है और भारत में कब प्रारम्भ हुआ था ?

उ० : भारत विश्व भर में फुटबाल खेल का सरताज है।

शैलेश कुमार मिश्र,

प्र० : इस समय विश्वनाथ एवं कालीचरण में श्रेष्ठ कौन है क्योंकि लगभग दोनों एक ही क्रम के बल्लेबाज हैं तथा इस समय दोनों ही है। इसके साथ आप इन दोनों का टेस्ट रिकार्ड बताने का कष्ट करें।

उ० : कालीचरण ने ६८ इनिंग्ज में २६०३ रन बनाए हैं (८ शतक १६ अर्ध शतक) विश्वनाथ ने ७३ इनिंग्ज में २६८१ रन बनाए हैं (५ शतक १६ अर्धशतक) अतः आँकडों के मुताबिक तो कालीचरण ही श्रेष्ठ बैठता है।

एस० मन्जुर हसन 'कादरी'—बीकानेर

प्र० : क्या बाली बाल में भारत दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है ?

उ० : यह आपसे किसने कहा ? भारत तो एशिया में भी बहुत पीछे है। विश्व का ओलम्पिक चैम्पियन पोलैंड है। इसके बाद रूस तथा क्यूबा का नम्बर आता है। सारांश यह है कि इस खेल के तीन उच्चतम स्थानों पर तीनों कम्यूनिस्ट देश हैं।

रमेश चन्द शर्मा—सिकन्द्राबाद

प्र० : कौन-सा खेल सबसे खतरनाक होता है ?

उ० : बॉक्सिंग तथा कार, मोटर साईकिल रेसें।

दिनेश मटाई 'राजा'—इन्दौर

प्र० : बास्केट बाल का वजन कितना होता है ?

उ० : बास्केट बाल का व्यास ३० इंच होता है और इसका भार २० और २२ औंस के बीच होता है। इसके भीतर वायु का दबाव इतना होना चाहिए कि बाल को यदि ६ फुट की ऊंचाई से छोड़ दिया जाए तो ४ फीट से कुछ ऊंचा उछले।

राजेश कुमार दुबे—जबलपुर

प्र० : मुझे क्रिकेट के बारे में तकनीकी ज्ञान है। मैं एक प्रसिद्ध कमेंटेटर बनना चाहता हूं मुझे क्या करना चाहिये ?

उ० : अपने क्रिकेट के कमेंटेटर से इस बारे में गाइडेंस प्राप्त कीजिए। आल इंडिया रेडियो के श्री जसदेव सिंह या श्री जोगाराव से भी आप पत्र व्यवहार कर सकते हैं। इन्हें पत्र मार्फत आकाशवाणी भवन, नयी दिल्ली ११०००१ के पते पर भेजा जा सकता है।

सुवीर गोस्वामी—आगरा

प्र० : विश्वनाथ और गावस्कर में किसका खेल ज्यादा उत्तम है।

उ० : दोनों भारत के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज हैं, फिर भी अधिकांश आलोचकों के मत में गावस्कर को ज्यादा नम्बर मिलते हैं।

अनिल कुमार पोद्दार—कलकत्ता

प्र० : अब तक भारतीय क्रिकेट टीम के कितने कप्तान हुए हैं ? उन्हें क्रम दें।

उ० : सी. के. नायडू, एम. के. विजयानगरन, इफ्तीखार अली, लाला अमरनाथ, विजय हजारे, वीनू मांकड़, गुलाम अहमद, पी. आर. उम्रीगर, एच. आर. अधिकारी, डी. के. गायकवाड़, पंकजराय, जी. एस रामचन्द, नारी कॉंटेक्टर, मंसूर अली खां पटोदी, चन्दू बोर्डे, अजित वाडेकर, वेंकट राघवन, तथा बिशन सिंह बेदी (बेदी के अस्वस्थ होने पर दो बार गवास्कर ने भी कप्तानी संभाली है।) भारतीय क्रिकेट इतिहास में केवल एक ही बाप बेटे की जोड़ी ने कप्तानी संभाली है। वह है इफ्तीखार अली और मंसूर अली खां पटोदी।

रामनयन—सांताक्रूज

प्र० : पाकिस्तानी टीम के खिलाड़ी मजीद खान का टेस्ट रिकार्ड क्या है ?

उ० : ३७ टेस्ट २६५१ रन ४७ कैच २४ विकेट।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी 'उषा'—रोहतास

प्र० : क्या क्रिकेट टैस्ट के खिलाड़ी पैसा लेकर किसी चीज का विज्ञापन देते हैं, जैसे सुनील गवास्कर—'स्पोर्टस वीक' का विज्ञापन रेडियो सिलोन से देते हैं।

उ० : जी हां, देते हैं। इस प्रकार वे कुछ अतिरिक्त आमदनी कर लेते हैं। क्रिकेट क्योंकि विश्व के मान्य ओलम्पिक खेलों में नहीं आता। इसलिये इस पर पेशेवर या गैर पेशेवर का नियम लागू नहीं होता।

किशोर जीवतारामानी—अकोला

प्र० : क्या भारतीय हाकी फिर से विश्व चैम्पियन बन सकती है ?

उ० : क्यों नहीं ? केवल आवश्यकता इस बात की है कि हाकी अधिकारी अपनी राजनीति से बाज आयें और भारत-पाकिस्तान मिलकर विश्व हाकी संघ को ऐसे नियम न बनाने दें जो यूरोपियन ढंग के खेल के लिये लाभदायक हों।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२
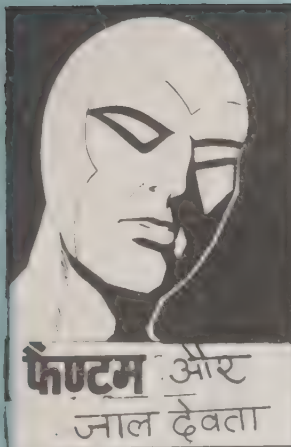
फैण्टम और
जाल देवता

बूढ़ा आदमी मोज 'पूर्वी क्षेत्र का रखवाला' की कहानी आगे सुनाता है ।
जानते हो तुम्हारे वंश का नौवां फैण्टम क्या था ?
हां, वह सातवें फैण्टम का बड़ा लड़का था जिसने फ्रांस की रानी से शादी की थी ।

वह तुम सबसे शक्तिशाली था ।
वह अपनी दोनों बाजुओं के जोर से पेड उखाड़ सकता था और वह एक ही घूंसे से बडे गोरिल्ले को आराम की नींद सुला सकता था ।
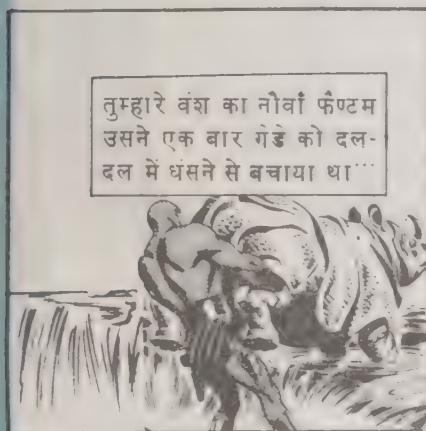
तुम्हारे वंश का नौवां फैण्टम उसने एक बार गेंडे को दलदल में धंसने से बचाया था…
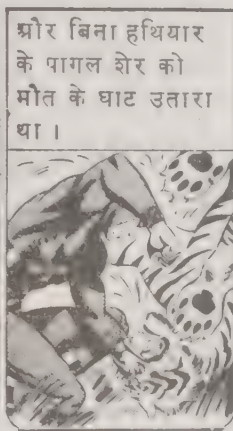
और बिना हथियार के पागल शेर को मौत के घाट उतारा था ।

और एक बार पुल के टूटने से कुछ की जान बचाई थी ।
हां, अब मुझे याद आया आगे सुनाओ ।
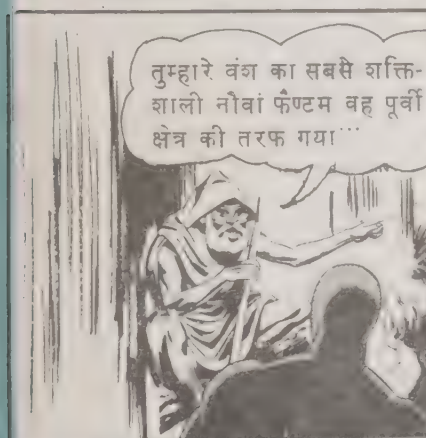
तुम्हारे वंश का सबसे शक्तिशाली नौवां फैण्टम वह पूर्वी क्षेत्र की तरफ गया…

हमें भी अपने साथ आने दो ।

मेरा अकेला जाना ही अच्छा है ।
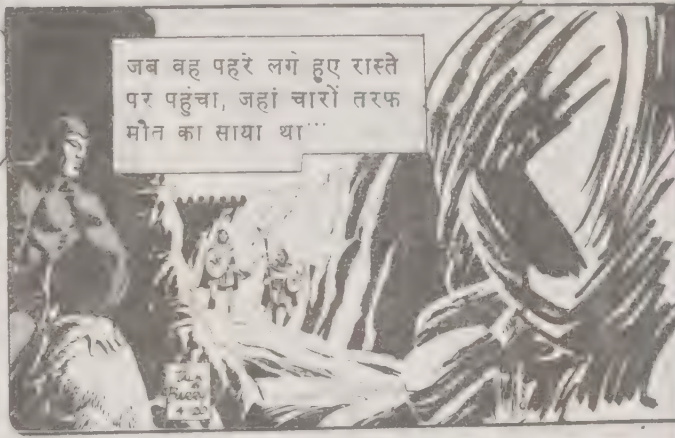
जब वह पहरे लगे हुए रास्ते पर पहुंचा, जहां चारों तरफ मौत का साया था…
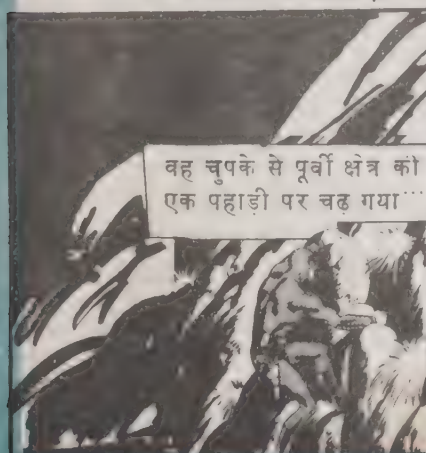
वह चुपके से पूर्वी क्षेत्र की एक पहाड़ी पर चढ़ गया…
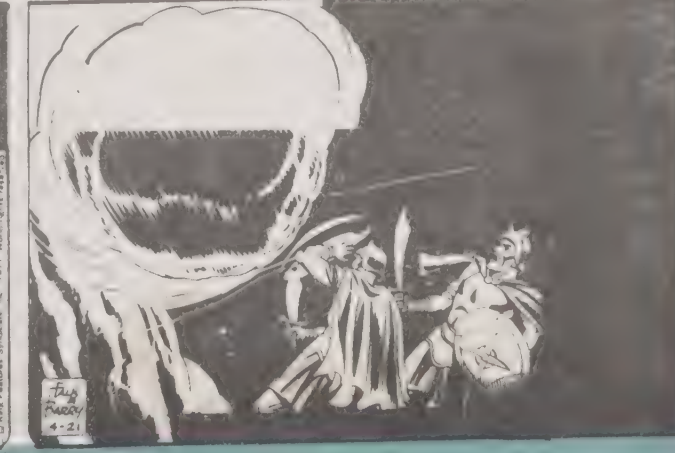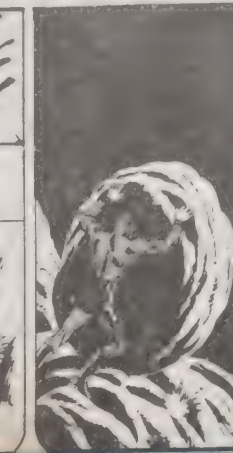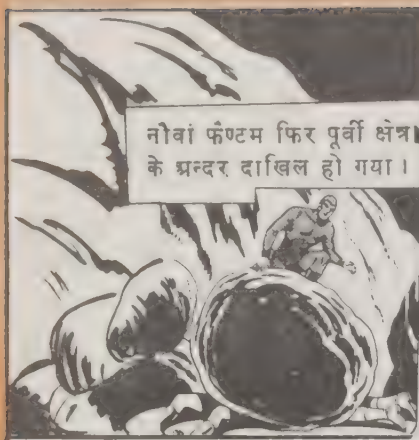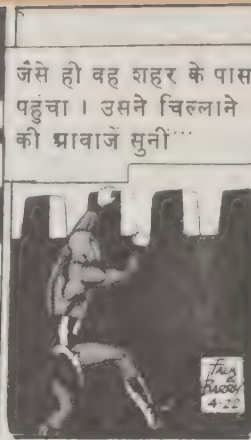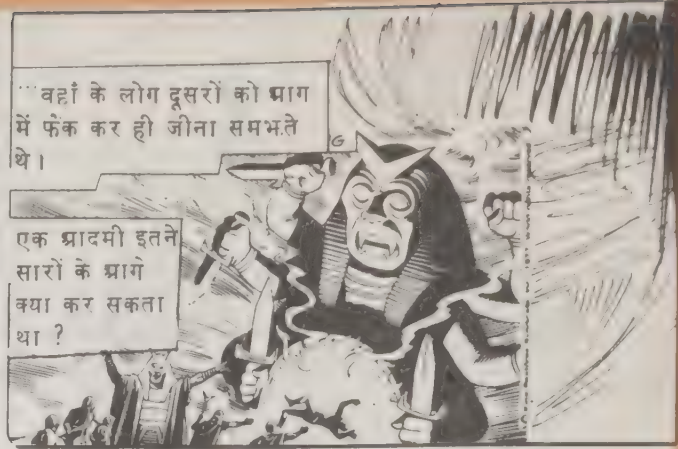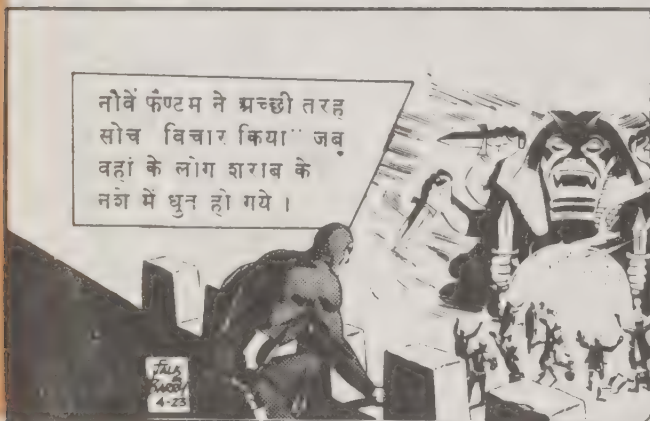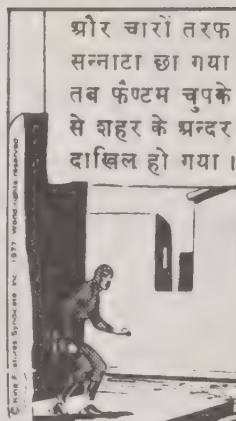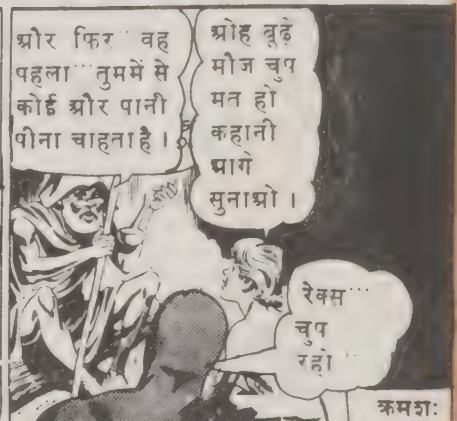
इस प्रतियोगिता में भाग लेकर पहला, दूसरा या तीसरा इनाम जीतिये, अपना नाम व पता सही और साफ-साफ लिखें। आप चाहे तो एक से अधिक चित्र में रंग भर कर भेज सकते हैं।

नाम ----------------

पता ----------------

कार्यालय में पहुंचने की अंतिम तिथि १७ दिसम्बर ७७
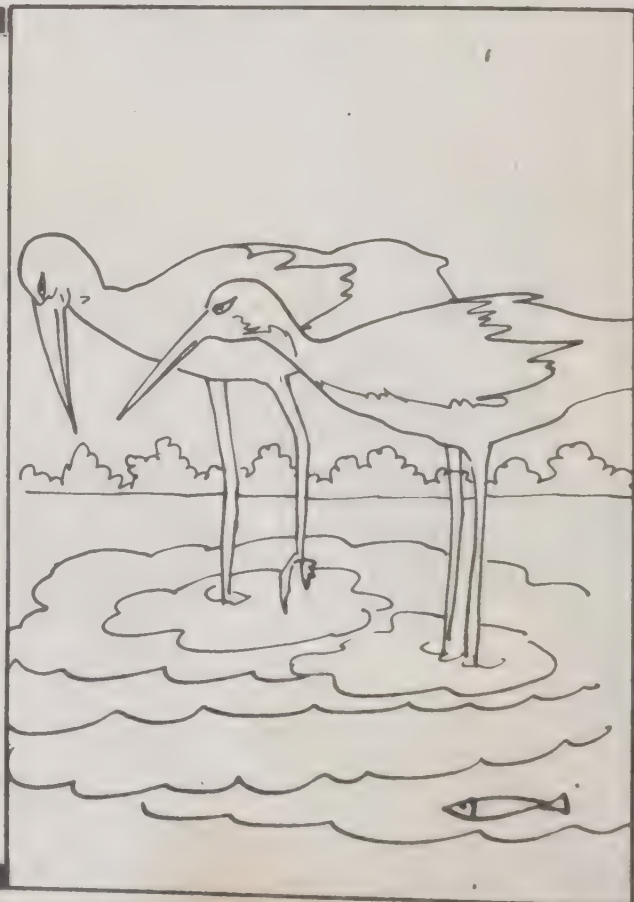
मुझे मेरे मित्रों से बचाओ

****

पद्म सिंह शर्मा 'कमलेश'

एक दिन मैं दिल्ली के चांदनी चौक में जा रहा था कि मेरी नजर एक फकीर पर पड़ी, जो बड़े प्रभावोत्पादक प्रकार से अपनी दीन दशा लोगों से कहता जा रहा था। दो-तीन मिनट बाद यह दर्द से भरी हुई 'स्पीच' उन्हीं शब्दों में और उसी ढंग से दोहरा दी जाती थी। यह तर्ज कुछ मुझे ऐसा खास मालूम हुआ कि मैं उस शख्स को देखने और उसके शब्द सुनने के लिए ठहर गया। इस फकीर का कद लम्बा, शरीर खूब मोटा-ताजा था और चेहरा एक हद तक खूबसूरत होता, पर बदमाशी और निर्लज्जता ने सूरत बिगाड़ दी थी। वह तो उसकी शक्ल थी। रही उसकी वाणी। सो मैं ऐसा शुष्क हृदय नहीं हूं कि उसका खुलासा लिख दूं। वह इस योग्य है कि एक-एक शब्द लिखा जाय। सुनिए वह 'स्पीच' यह थी—

'ऐ भाई खुदानरम मुसलमानो और धर्मात्मा हिन्दुओ ! खुदा के लिए मेरा हाल सुनो। मैं आफत का मारा, सात बच्चों का बाप हूं, अब रोटियों का मुहताज हूं और अपनी मुसीबत एक-एक से कहता हूं, मैं भीख नहीं मांगता, मैं यह चाहता हूं कि अपने वतन को चला जाऊं, पर कोई खुदा का प्यारा मुझे घर भी नहीं पहुंचाता, हाय ! घर भी नहीं पहुंचाता।'

'ऐ खुदा के बन्दो ! मैं परदेसी हूं, मेरा कोई दोस्त नहीं, हाय ! मेरा कोई दोस्त नहीं, अरे कोई मेरी सुनो, मैं गरीब परदेसी हूं।'

फकीर तो यह कहता हुआ और जिन पर उसके किस्से का असर हुआ, उनकी खैरात लेता हुआ आगे बढ़ गया। पर मेरे दिल में कई विचार उत्पन्न हुए और मैंने अपनी हालत का मुकाबला उससे किया और मुझे स्वयं आश्चर्य हुआ कि बहुत-सी बातों में मैंने उसको अपने से अच्छा पाया। यह ठीक है कि मैं काम करता हूं और वह मुफ्तखोरी से दिन काटता है, मैंने शिक्षा पाई है, वह निरक्षर है। मैं अच्छे लिबास में रहता हूं, वह फटे कपड़े पहनता है। बस यहां तक मैं उससे अच्छा हूं, आगे बढ़कर उसकी दशा मुझसे बहुत उत्तम है। मैं रात-दिन चिन्ता में काटता हूं और वह ऐसी निश्चितता से जिन्दगी बसर करता है कि रोने और बिसूरने की सूरत बनाने पर भी उसके मुख पर प्रसन्नता झलकती थी। उसके स्वास्थ्य पर मुझे स्पृहा करनी चाहिए। बड़ी देर तक मैं सोचता रहा कि इसकी यह स्पृहणीय दशा किस वजह से है ? अन्त में मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि जिसे वह मुसीबत ख्याल करता है, वही उसके हक में न्यामत है। वह खेद से कहता कि 'मेरा कोई दोस्त नहीं।' 'मैं दुःख से कहता हूं कि मेरे इतने दोस्त हैं।' उसका कोई दोस्त नहीं है, यदि यह सच है तो उसे धन्य कहना चाहिए, बधाई देनी चाहिए।

मैं अपने दिल से ये बातें करता हुआ मकान पर आया। कैसा खुशकिस्मत आदमी है, कहता है, 'मेरा कोई दोस्त नहीं।' ये खुशनसीब आदमी ! यहीं तो मुझसे बढ़ गया। पर क्या इसका यह कहना सच भी है ? अर्थात् क्या वास्तव में इसका कोई दोस्त नहीं, जो मेरे दोस्त की तरह उसे दिन-भर में पांच मिनट की भी फुरसत न दे। मैं अपने मकान पर एक लेख लिखने जा रहा हूं, पर खबर नहीं कि मुझे जरा-सा भी वक्त ऐसा मिलेगा कि मैं एकान्त में अपने विचारों को इकट्ठा कर सकूं और निश्चितता से उन्हें लिख सकूं, या जो व्याख्यान मुझे कल देना है, उसे सोच सकूं। क्या यह फकीर दिन-दहाड़े अपना रुपया ले जा सकता है और उसका कोई दोस्त रास्ते में न मिलेगा और ये न कहेगा—कि 'भाई जान ! देखो पुरानी दोस्ती का वास्ता देता हूं, मुझे इस वक्त जरूरत है, थोड़ा-सा रुपया कर्ज दो ?' क्या इसके मिलने वाले वक्त-बेवक्त इसे दावतों में खींचकर नहीं ले जाते, क्या कभी ऐसा नहीं होता कि उसे नींद के झोंके आ रहे हों, पर यार-दोस्तों की गोष्ठी जमी है जो किस्से पर किस्सा और लतीफे पर लतीफा कह रहे हैं और उठने का नाम नहीं लेते ? क्या इसे मित्रों के पत्रों का उत्तर नहीं देना पड़ता ? क्या इसके प्रिय मित्र की लिखी कोई पुस्तक नहीं जो उसे ख्वाहमख्वाह पढ़नी पड़े और अनुकूल समालोचना लिखनी पड़े ? क्या इसे मित्र-मंडली के हो-हुल्लड़ में शरीक होना नहीं पड़ता ? क्या मित्रों के यहां मिलने उसे जाना नहीं पड़ता, और यदि न जाय तो कोई शिकायत नहीं करता ?

यदि इन सब आपत्तियों से वह बचा हुआ है तो कोई आश्चर्य नहीं जो वह ऐसा हट्टा-कट्टा है, और मैं दुर्बल और कृश हूं, पर इतने पर भी ईश्वर को धन्यवाद नहीं देता। ईश्वर जाने वह और क्या चाहता है। लोग कहेंगे कि इसके यह कैसे बुरे विचार हैं। मित्रों के बिना जीना दूभर हो जाता है—जीवन भारभूत हो जाता है, और यह उनसे भागता है। पर मैं मित्रों को बुरा नहीं कहता, मैं जानता हूं कि वह मुझे प्रसन्न करने के लिए मेरे पास आते हैं और मेरे शुभचिंतक हैं। पर परिणाम यह है कि मित्रों का इरादा होता है मुझे लाभ पहुंचाने का और हो जाता है नुकसान। चाहे मुझ पर घृणा की जाय, पर मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि आज तक मेरे सामने कोई यह सिद्ध न कर सका कि बहुत-से मित्र बनाने, मित्रता का क्षेत्र विस्तृत करने का क्या लाभ है। मैं तो यहां तक कहता हूं कि यदि संसार में कुछ काम करना है और कोई बातों में ही उम्र नहीं गुजारनी है तो कई अत्यन्त स्निग्ध मित्रों को भी छोड़ना पड़ेगा चाहे इससे मुझे कितना ही दुःख हो।

मसलन मेरे मित्र ईश्वरशरण हैं जिन्हें मैं 'भड़भड़िया' दोस्त कहता हूं। वह बहुत भले आदमी हैं। मेरी उनकी मित्रता बहुत पुरानी और बेतकल्लुफी की है, पर उनके स्वभाव में यह है कि दो मिनट निश्चित नहीं बैठा जाता। जब आयेंगे शोर मचाते हुए, चीजों को उलट-पुलट करते हुए। इनका आना भूचाल के आने से कम नहीं है। जब वह आते हैं, मैं कहता हूं, कोई आ रहा है, प्रलय नहीं है। इनके आने की मुझे दूर से खबर हो जाती है, यद्यपि मेरा लिखने-पढ़ने का कमरा छत पर है। यदि मेरा नौकर कहता है कि वह इस वक्त काम में बहुत

ही निमग्न है—तो वह फौरन चीखना शुरू कर देते हैं कि 'कमबख्त को अपने स्वास्थ्य का भी तो ध्यान नहीं, (नौकर से) साहब कब से काम कर रहे हैं?'—'बड़ी देर से।' शिव-शिव, अच्छा बस मैं एक मिनट इनके पास बैठूंगा, मुझे खुद जाना है, छत पर होंगे न? मैं पहले ही समझता था, यह कहते हुए वह ऊपर आते हैं और दरवाजे को इस जोर से खोलते हैं कि मानों कोई गोला आकर लगा (आज तक उन्होंने दरवाजा खटखटाया नहीं) और आंधी की तरह दाखिल होते हैं।

अहा हा! आखिर तुम्हें मैंने पकड़ लिया, पर देखो मेरे कारण अपना लिखना बन्द मत करो, मैं हर्ज करने नहीं आया। ओहो! कितना लिख डाला है। कहो तबीयत तो अच्छी है? मैं तो सिर्फ यही पूछने आया था। ईश्वर जानता है मुझे कितना हर्ष होता है कि मेरे मित्रों में एक आदमी ऐसा है जो सुलेखक कहकर पुकारा जा सकता है—लो अब जाता हूं, बैठूंगा नहीं, एक मिनट नहीं ठहरने का। तुम्हारी कुशल मालूम करनी थी, बस यह कहकर वह बड़े प्रेम से हाथ मिलाते हैं और अपने जोश में मेरे हाथ को इस कदर दबा देते हैं कि उंगलियों में दर्द होने लगता है और मैं कलम नहीं पकड़ सकता। यह तो एक ओर रहा, अपने साथ मेरे सब विचारों को भी ले जाते हैं। विचार-समूह को जमा करने का प्रयत्न करता हूं, पर अब वह कहां! यदि देखा जाय तो मेरे कमरे में वह एक मिनट से अधिक नहीं रहे, तथापि वह घंटों रहते तो इससे ज्यादा नुकसान न करते। क्या मैं उन्हें छोड़ सकता हूं? मैं इससे इन्कार नहीं करता कि उनकी मेरी मित्रता पुरानी है और वह मुझ से भाइयों की तरह स्नेह करते हैं पर मैं उन्हें छोड़ दूंगा, हां छोड़ दूंगा। चाहे कलेजे पर पत्थर रखना पड़े।

और लीजिए, दूसरे मित्र विश्वनाथ हैं। यह बाल-बच्चों वाले आदमी हैं, और रात-दिन उन्हीं की चिन्ता में रहते हैं। जब कभी मिलने आते हैं तो तीसरे पहर के करीब आते हैं, जब मैं काम से निबट चुकता हूं या इस कदर थका हुआ होता हूं कि जी यही चाहता है कि एक घंटे आराम कुर्सी पर पड़ा रहूं। पर विश्वनाथ आये हैं, उनसे मिलना जरूरी है, उनके पास बातें करने के लिए सिवा अपनी स्त्री और बच्चों की बीमारी के और कोई मजमून ही नहीं। मैं कितनी ही कोशिश करूं, पर वह उस विषय से बाहर नहीं निकलते। यदि मैं मौसम का जिक्र करता हूं तो वह कहते हैं, हां, बड़ा खराब मौसम है। मेरे छोटे बच्चे को बुखार आ गया, मंझली लड़की खांसी से पीड़ित है। यदि पालिटिक्स या साहित्य-सम्बन्धी चर्चा प्रारम्भ करता हूं तो वह (विश्वनाथजी) फौरन फरमाते हैं कि भाई आजकल घर-भर

में बीमारी है। मुझे इतनी फुर्सत नहीं कि अखबार पढ़ूं। यदि किसी सभा-सोसायटी में आते हैं तो अपने लड़कों को जरूर साथ लिये आते हैं और हर एक से बार-बार पूछते रहते हैं कि तबीयत तो नहीं घबराती? प्यास तो नहीं मालूम होती? कभी-कभी नब्ज भी देख लेते हैं और जहां भी किसी से मिलते हैं तो घर की बीमारी ही की चर्चा करते हैं।

इसी प्रकार मेरे एक मुकदमेबाज मित्र हैं, जिन्हें अपनी रियासत के झगड़ों—अपने प्रतिपक्षी की बुराइयों—और जज साहब की स्तुति या निन्दा (स्तुति उस दशा में जब उन्होंने मुकदमा जीता हो) के अतिरिक्त कोई विषय ही नहीं। अपने और नाना भांति के मित्रों से मैं लक्ष्मणस्वरूप जी की चर्चा विशेष रूप से करूंगा।

आप विक्रमपुर के रईस और जिले-भर में एक प्रतिष्ठित पुरुष हैं। उन्हें अपनी योग्यता के अनुसार साहित्य से बहुत अनुराग है, साहित्य पढ़ने का उतना नहीं, जितना साहित्य-सेवियों से मिलने जुलने और परिचय प्राप्त करने का। उनका विचार है कि विद्वानों का थोड़ा-बहुत सत्कार करना धनिकों का कर्त्तव्य है। वह एक बार मेरे यहां तशरीफ लाये और बड़े आग्रह से मुझे विक्रमपुर ले गये। यह कहकर कि— शहर में रात-दिन कोलाहल और अशांति रहती है, गांव में कुछ समय रहने से जलवायु का परिवर्तन भी होगा और वहां लिखने का काम भी अधिक निश्चितता से कर सकोगे। मैंने एक कमरा खास तुम्हारे लिए ठीक कराया है, जिसमें पढ़ने लिखने का सब सामान प्रस्तुत है। थोड़े दिन रहकर चले आना।'

मैं ऐसे प्रेमपूर्ण आग्रह पर मना कैसे कर सकता था। मुख्तसर सामान लिखने-पढ़ने का लेकर उनके साथ हो लिया। 'प्रतिभा' संपादक से प्रतिज्ञा कर चुका था कि यथा समय एक लेख उनकी सेवा में भेजूंगा। लक्ष्मणस्वरूप जी की कोठी पर पहुंचकर मैंने वह कमरा देखा जो मेरे लिए ठीक किया गया था। यह कमरा कोठी की दूसरी मंजिल पर खुला था और अत्यन्त हृदयहारी दृश्य मेरी आंखों के सामने होता था। प्रातःकाल मैं नाश्ते के लिए बुलाया गया। जब चाय का दूसरा प्याला पी चुका तो अपने कमरे में जाने के लिए उठना ही था कि चारों ओर आग्रह होने लगा— हैं हैं कहीं ऐसा गजब न करना कि आज से ही काम शुरू कर दो अपने दिमाग को कुछ आराम तो दो, और आज का दिन तो विशेषकर इस योग्य है कि दृश्य का आनन्द लिया जाय, चलिए गाड़ी तैयार कराते हैं, दरिया की सैर होगी फिर वहां से दो मील दौलतपुर है आपको वहां के रईस राजा हृदयनारायण सिंह से मिलायेंगे।'

मेरा माथा वहीं ठनका कि यदि यही

दशा रही तो यहां भी अवकाश मिल चुका। अस्तु इस समय तो मैं सैंकड़ों बहाने बनाकर बच गया, और मेरे कारण यह भी रुक गये —न जा सके, पर मुझे बहुत जल्द मालूम हो गया कि जिस दुर्लभ पदार्थ—एकान्तवास और अवकाश—के लिए मैं आतुर था वह मुझे यहां भी प्राप्त न होगी।

मैं जल्दी से उठकर अपने कमरे में आया और उस समय जरा ध्यान से उस मेज के सामान को देखा जो मेरे लिखने-पढ़ने के लिए तैयार की गई थी। मेज पर बहुत कीमती कामदार कपड़ा पड़ा हुआ था, जिस पर स्याही की बूंद गिराना महापाप से कम न होगा। चांदी की दवात, पर स्याही देखता हूं तो सूखी हुई। अंग्रेजी कलम निहायत कीमती और दुष्प्राप्य, पर एकआध को छोड़ निब किसी में नहीं। ब्लाटिंग पेपर मखमली जिल्द की किताब में पर लिखने के कागज का पता नहीं। इसी प्रकार बहुत-सा बढ़िया बहुमूल्य सामान मेज पर था, पर इसमें से बहुत-कुछ मेरे काम का नहीं, और जो चीजें जरूरत की थीं, वे मौजूद नहीं। अन्त में मैंने अपना वही पुराना, पर काम का बक्स और अपनी मामूली दवात और कलम (जिसने अब तक बड़ी ईमानदारी से मेरी सहायता की थी—मेरे उड़ते हुए विचारों को बड़ी फुर्ती से पकड़कर कागज के पिंजरे में बन्द किया था) निकाली और लिखना शुरू किया। यह जरूर हुआ कि जिन मधुरभाषी पंछियों की प्रशंसा करते कवि नहीं थकते, उन पंछियों की कृपा से इस समय मैं प्रसन्न नहीं हुआ कि सबके सब नीचे वृक्ष पर जमा हो गये और शोर मचाना शुरू कर दिया। तथापि प्रयत्नपूर्वक मैंने उधर से कान बन्द कर लिये, और लिखने में सर्वात्मना संलग्न हो गया ''तन् ननन् तन्तनाना, छन् ततन् तन् तने—' मैं ऐसा ध्यान में मग्न था कि इधर-उधर की कुछ सुध न थी। इस तन्-तन् ने चौंका दिया। ऐ यह क्या है ? ओफ्फो, अब मैं समझा, मेरे कमरे के करीब लक्ष्मणस्वरूप जी के छोटे भाई का कमरा है, यह गाने-बजाने में बहुत प्रवीण हैं, इस समय सितार से शौक फरमा रहे हैं, बहुत खूब बजा रहे हैं—

जमुना तलफत बीती रैन।
त्रिविध समीर तीर-सम लागत विषमय कोकिल बैन।।

वाह क्या कहना है, कमाल करते हैं ! कोई आध घंटा उन्होंने सितार बजाकर, मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे गानामृत पान कराकर तृप्त किया। फिर किसी कारण से वे अपने कमरे से चले गये। सन्नाटा हो गया तो मुझे फिर अपने काम का ध्यान आया।

ऐ मेरे विचारों ! तुम्हीं मेरी निधि हो, मेरे मस्तिष्क में फिर आ जाओ—यह प्रार्थना करके मैंने कागज पर नजर डाली कि देखूं कहां छोड़ा है। मैं इस वाक्य तक पहुंचा—'हम इस विस्तृत और गहन विषय पर जितना विचार करते और ध्यान दौड़ाते हैं उतनी ही इसकी गहनता और जटिलता' —इसके आगे मैं क्या लिखने वाला था 'नदी को बालुका-राशि के समान'—नहीं ऐसा साधारण और असंगत वाक्य तो न था, कोई उत्कृष्ट उपमा थी, बड़े सुन्दर ओजस्वी शब्द थे, ईश्वर जाने क्या था, क्या न था, अब तो दिमाग में उसका पता भी नहीं। गाने वाले साहब तो शिकायत ही कर रहे थे कि—'त्रिविध समीर तीर-सम लागत' पर मेरे विचार रूप पंछी सचमुच ही इस तीर शब्द को सुनकर एकदम दिमाग की डाली से उड़ गये। अच्छा, अब उस वाक्य को मुझे नये सिरे से ठीक करना चाहिए, गहनता और जटिलता की जगह कुछ और होना चाहिए—

'हम इस विषय पर जितना विचार करते हैं, उतना ही इन विद्या रूप रत्नों को जो हमारे देश और जाति के विद्याकोश को भरने के लिए पर्याप्त हैं और जिनका महत्त्व —आप कहां भूल पड़े, इतने दिनों कहां रहे ? यह क्या असंबद्ध वाक्य हुआ, 'आप कहां भूल पड़े, इतने दिनों कहां रहे', यह वाक्य तो लक्ष्मणस्वरूप जी ने किसी मित्र से कहे हैं, जो अभी उनसे मिलने आये हैं, मैं अपनी धुन में उन्हें ही लिख गया। हां तो, काटकर फिर ठीक करना चाहिए—जिनका महत्त्व, देश और जाति को विदित नहीं हुआ और—कोई दरवाजा खटखटाता है। कौन है ?—जी मैं हूं मोहन। सरकार ने कहा है कि यदि आपको तकलीफ न हो तो नीचे जरा-सी देर के लिए तशरीफ लाइये। कोई साहब आये हुए हैं और सरकार उन्हें आपसे मिलाना चाहते हैं—। जी नहीं चाहता था, पर उठा और नीचे गया। लक्ष्मणस्वरूप जी के मित्र राजा हृदयनारायण सिंह आये हुए थे, उनसे मेरा परिचय कराया गया। थोड़ी देर बाद वह तशरीफ ले गये। मुझे छुट्टी मिली। मैंने जी जमाकर फिर लिखना शुरू किया। थोड़ी देर बीती थी कि मोहन ने फिर दरवाजा खटखटाया। मालूम हुआ, मेरी फिर याद हुई। हमारे मेजबान के कोई और मित्र आये हैं, और मैं उन्हें दिखाया जाऊंगा। मानों मैं भी उस अरबी घोड़े के तुल्य था, जिसे मेरे मेजबान मित्र ने हाल ही खरीदा था, और जो प्रत्येक आने वाले मित्र को अस्तबल से मंगाकर दिखाया जाता था। इन महाशय से छुट्टी पाकर और भाग कर फिर अपने कमरे में आया। विचार-शृंखला फिर विच्छिन्न हो गई थी, खयालात गायब हो गये थे, वाक्य फिर नये सिरे से बनाना पड़ा। जी उचाट हो गया। बड़ी कठिनता से फिर बैठा और लिखना शुरू किया। इस बार सौभाग्य से कोई आधा घंटा ऐसा मिला जिस में कोई आया-गया नहीं, अब मेरी कलम तेजी से चल रही थी और मैं लिख रहा था। 'हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारे देश के सुयोग्य युवकजन जिन्हें नवीन आविष्कारों और अनुसन्धानों से अनुराग है और जो कोलम्बस के समान नवीन विचार और नई दुनिया की उद्भावना में अपने को—

दरवाजे पर फिर दस्तक—'क्या है ?' 'हुजूर खाना तैयार है, परोसा जा चुका है।' 'अच्छा'—अपने को संकट में डालने से भी नहीं डरते, अवश्य इस ओर ध्यान देंगे, और अपने उद्योग और परिणाम से वर्तमान'—दरवाजा फिर खटखटाया गया—'हां, हुजूर ! सरकार आपका इन्तजार कर रहे हैं, खाना ठंडा हुआ जाता है।' 'ओफ्फो, मुझे ख्याल नहीं रहा, सरकार से निवेदन करना, मेरा इन्तजार न करें। मैं फिर खा लूंगा, इस वक्त मुझे कुछ ऐसी भूख नहीं',—और आने वाली सन्तानों को उपकृत करेंगे। यही वह नवयुवक हैं जो जाति की नौका को, ईश्वर की सहायता पर विश्वास करके आपत्तियों से बचाते और सफलता के किनारे लगाते, जीवन और मृत्यु की कठिन समस्या—दस्तक —क्या है ? 'सरकार कहते हैं कि यदि आप थोड़ी देर में खायेंगे तो हम भी उसी वक्त खायेंगे, पर खाना ठंडा होकर खराब हो जायेगा।' अच्छा भाई लो अभी आया—' यह कहकर मैं खाने के लिए जाता हूं, सबसे क्षमा मांगता हूं। मेजबान बड़े कृपापूर्ण विनीत भाव से कहते हैं, 'चेहरे पर थकान मालूम होती है। क्या बहुत लिख डाला ? देखो, मैं कहता न था कि शहर में ऐसी फुरसत और निश्चिंतता कहां ! इस पर ठीक

है, उचित है, के अतिरिक्त और मैं क्या कहता। अब खाने का आग्रह होता है, जिस चीज से मुझे रुचि नहीं, वही खिलाई जाती है। भोजन की समाप्ति पर मेजबान साहब फरमाते हैं—तीसरे पहर को तुम्हें गाड़ी में चलना होगा, मैं तुम्हें इस वास्ते यहां नहीं लाया कि सख्त दिमागी काम करके अपना स्वास्थ्य बिगाड़ लो। कमरे में वापस आकर मैं थोड़ी देर इसलिए लेटता हूं कि ख्यालात जमा कर लूं और फिर लिखना शुरू कर दूं, पर अब ख्यालात कहां? मजमून उठाकर देखता हूं, जीवन और मृत्यु की कठिन समस्या के सम्बन्ध में क्या लिखने वाला था, इन शब्दों के पश्चात् कौन-से शब्द दिमाग में थे? अब कुछ याद नहीं कि इस वाक्य की पहले वाक्यों से किस प्रकार संगति करनी थी। यों ही पड़े-पड़े नींद आ जाती है, तीसरे पहर फिर उठता हूं तो मस्तिष्क ठीक स्वस्थ है, जीवन और मृत्यु की कठिन समस्या बिलकुल समझ में आ जाती है, पूरा वाक्य दर्पण की तरह साफ दिखाई देता है। मैं खुशी-खुशी उठकर मेज पर गया, और लिखना चाहता था कि फिर वही दस्तक! नौकर सूचना देता है कि गाड़ी तैयार है, सरकार कपड़े पहने आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं फौरन नीचे जाता हूं तो पहली बात जो वह कहते हैं वह यह होती है—'आज तो दस्ते के दस्ते लिख डाले।' मैं सच्ची बात कहूं कि कुछ भी नहीं लिखा तो वह हंसकर उत्तर देते हैं कि आखिर इस शील-संकोच की क्या जरूरत है—

खुदा के वास्ते झूठी न खाइए कसमें।
मुझे यकीन हुआ और मुझको एतबार हुआ॥

मिल-मिलाकर शाम को वापस आये। आने के बाद बातें होती हैं। सोने के वक्त अपना दिन-भर का काम उठाकर देखता हूं तो एक पृष्ठ से ज्यादा नहीं, वह भी असंबद्ध। क्रोध में आकर उसे फाड़कर फेंक देता हूं। और दूसरे दिन अपने आतिथेय मित्र को नाराज करके अपने घर लौट आता हूं। मैं कृतघ्न कहा जाऊंगा, पर मैं मजबूर हूं। इस प्रिय कृपालु मित्र को भी छोड़ दूंगा। मैंने कुछ विस्तार से इनका हाल कहा है, पर यह न सोचना कि यहीं उन मित्रों की संख्या समाप्त हो गई है जिनसे मैं छुट्टी चाहता हूं, नहीं अभी बहुत-से बाकी हैं।

एक महाशय हैं जो मुझसे कभी नहीं मिलते। जब आते हैं मैं उनका मतलब समझ जाता हूं। यह महाशय हमेशा कर्ज मांगने के लिए आते हैं। एक महाशय हैं कि जब मुझसे मिलते हैं कहते हैं—'भाई, एक अर्से से मेरा दिल चाहता है, तुम्हारी दावत दं, —पर कभी अपनी इस इच्छा को पूरी नहीं करते। एक मित्र हैं, वह आते ही प्रश्नों की झड़ी लगा देते हैं। जब उत्तर देता हूं तो ध्यान से सुनते नहीं, अखबार उठाकर पढ़ने लगते हैं या गाने लगते हैं। एक साहब हैं, जब आते हैं अपनी ही कहे जाते हैं, मेरी नहीं सुनते।

यह सब मेरे हितैषी और कृपालु हैं, पर मैं अपनी तबीयत को क्या करूं? साफ-साफ कहता हूं और इनमें प्रत्येक से कह सकता हूं—

मुझ पे अहसां जो न करते तो यह अहसां होता।

अब जब मैंने यह हाल लिखना शुरू कर दिया है, उचित प्रतीत होता है कि कुछ अन्य मित्रों के सम्बन्ध में भी अपने विचार प्रकट कर दूं। दरवाजे पर एक गाड़ी आकर रुकी, मैं समझ गया कि कौन साहब तशरीफ ला रहे हैं। मैं उनकी शिकायत न करूंगा, क्योंकि यह क्या आश्चर्य नहीं है कि मैं तीन घंटे से यह लेख लिख रहा था और किसी कृपालु ने कृपा नहीं की। इसलिए उनकी इस कृपा के उपलक्ष में मैं इस लेख को इसी अपूर्ण दशा में छोड़ता हूं और अपने मित्र का स्वागत करता हूं। यह मित्र मेरे स्वास्थ्य का बहुत ध्यान रखते हैं। जब आते हैं मुझ पर इस कारण नाराज होते हैं, तुम अपने स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखते। मैं जानता हूं कि इस वक्त भी ये किसी न किसी हकीम या डाक्टर का हाल सुनायेंगे, जो बड़ा अनुभवी है, या कोई अनुभूत योग मेरे लिए किसी से मांगकर लाये होंगे।

आइए, आइए,! चित्त प्रसन्न है? बहुत दिनों में पधारे। ●

साभार हास्यम
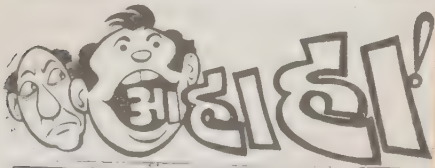
भावी पत्नी—'यदि तुम्हें मुझसे शादी करनी है तो सिगरेट पीना और क्लब जाना छोड़ना पड़ेगा।'

'अच्छा।'

'ये तो वे चीजें हुई जो तुम मेरे कहने से छोड़ोगे। अब तुम अपनी ओर से कोई चीज बताओ जो छोड़ोगे।'

'हां, एक चीज अपनी मर्जी से भी छोड़ूंगा।'

'वह क्या?'

'तुमसे शादी का इरादा।'

●

मोहन की मिस मालती से नई-नई पहचान हुई थी। मालती ने यह कह दिया था कि 'आप कभी भी घर आइये।'

मि० मोहन दूसरे ही दिन कदम नापते हुए मालती के घर जा पहुंचे। दरवाजे पर घण्टी बजाई। एक बूढ़ी सी औरत ने दरवाजा खोला। मि० मोहन ने कहा—'क्या मैं मिस मालती से मिल सकता हूं?'

बुढ़िया ने पूछा, 'आप कौन हैं?'

मि० मोहन सोच विचार में पड़ गये। कुछ हिचकिचा कर बोले—'मैं उसका भाई हूं।'

बुढ़िया भी असमंजस में पड़ गई। फिर कुछ सम्भलती हुई बोली—'तशरीफ लाइये, मैं उसकी माँ हूं।'

●

पत्नी अस्वस्थ थी। पति चाय बनाना चाहता था पर उसे चाय की पत्तियां नहीं मिल रही थीं।

पत्नी ने कहा—वह क्या रखी हैं सामने? सामने वह कनस्तर है न?

पति ने झुंझला कर कहा—पर उस पर तो मिर्च लिखा है।

पत्नी बोली—हां वही। उसे खोलो। उसी के भीतर एक चौकोर बक्स है जिस पर दियासलाई लिखा है। बस, उसी में पत्तियां हैं।

●

'कहा जाता है कि रम्भा से तुमने इसलिए विवाह किया है क्योंकि उसकी दादी उसके लिए बहुत माल छोड़ गई है।'

'यह बिलकुल झूठ है। मैं तो उससे शादी करता ही करता चाहे कोई भी माल छोड़ता।'

परोपकारी

बात-बे-बात की

नरेन्द्र कुमार निन्दी—कपूरथला : चाचा जी, ग्राप दौलत से ग्रधिक प्यार करते हैं, या हम जैसे भतीजों से ?

उ० : भतीजों से, पर इतना बता दीजिए, ग्रापकी जेब में दौलत है न ?

मनोज—लखीमपुर : दीवाना का हर ग्रंक जोरदार होता है । कृपया बतायें ग्रापके पास चुटकुले किस पते पर भेजूं ।

उ० : सम्पादक दीवाना साप्ताहिक, ८-बी बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-२ ।

रामजी लाल गुप्ता—अलीगढ़ : क्या ग्राप दीवाना फ्रैंडस क्लब में पाठकों के फोटो छापने का कुछ लेते हैं ?

उ० : जी नहीं, देते हैं । शुभकामनायें ।

भोजराज शर्मा भारती—दुलियाजान : चाचा जी, ग्राप ग्रपने जीवन में सबसे ग्रधिक कब हंसे थे ?

उ० : जब हमने रोते-रोते ग्राइने में ग्रपनी शक्ल देखी थी ।

यह जानने के लिए कि लोग हमें देख कर हंसते क्यों हैं ?

अशोक सेठी—हलद्वानी : मेरे दिल में एक दिन में पचास झटके लगते हैं । क्या डा० झटका इस बीमारी का इलाज कर देंगे ?

उ० : ग्राखरी झटके के ग्रलावा क्या कोई ग्रौर इलाज नहीं रह गया है ग्रापके पास ।

विनोद साहनी—बरेली : चाचा जी, हेमा की शादी का धर्मेन्द्र पर क्या ग्रसर पड़ेगा ?

उ० : मीना कुमारी के मरने से उस पर क्या ग्रसर पड़ा था जो हेमा की शादी से पड़ेगा ? बाकी रहे हेमा के दूसरे 'फैन' उनके लिए ग्रापको बताना पड़ेगा कि बरेली का पागलखाना कितना बड़ा है ?

नरेश प्रिंस—मुजफ्फर नगर : ग्राप जनता पार्टी के समर्थक हैं या किसी ग्रौर पार्टी के ?

उ० : उस ही पार्टी के जहां केवल वादे न हों, प्यालों में कुछ दिया भी जाए ।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी 'उषा'—रोहताश : यदि भगवान ग्रगले जन्म में ग्रापको पुरुष की बजाए स्त्री बना दे तो कैसा रहे ?

उ० : तब भी हमारी पांचों घी में होंगी ग्रौर सर कढ़ाई में । स्त्रियों की प्रगति की रफ्तार देखकर यह कहा जा सकता है कि तब तक हमारे समाज में स्त्रियां इतनी श्रेष्ठ होंगी जितने ग्राज पुरुष हैं ।

अनिल कुमार शर्मा—कानपुर : यदि ग्रापको प्रधानमंत्री बना दिया जाए तो ग्राप क्या करेंगे ?

उ० : हम ग्रपने मंत्रियों से कहेंगे कि या तो वह ग्रपनी फूट समाप्त कर दें, वर्ना हम उन्हें मुरादाबादी बर्तनों की तरह फूट में बेच देंगे ।

रामधन—एटा : मैं यदि मोटू-पतलू का साथी बन जाऊं तो मेरे हाथ क्या ग्राएगा ।

उ० : ग्रपना फूटा हुग्रा सर ग्रौर टूटे हुए हाथ पांव ।

जुबैदा खातून—भोपाल : ग्राप बेकार बातें करते हैं या ग्रापको संगीत जैसी किसी ग्रच्छी कला का भी शौक है ?

उ० : कलाकन्द ग्रच्छी तरह खाने का शौक है । संगीत का शौक हमारी श्रीमती जी को था । कल वह ग्रपनी एक पड़ोसन से कह रही थीं, 'ग्ररे बहन, कोई ग्रच्छा गाने वाली न हो तो लता मंगेशकर का नाम तो होगा ही । पहले मुझे गाना गाने का बहुत शौक था । पर जब से बच्चे हुए हैं, यह शौक समाप्त हो गया ।' इस पर हमने कहा, इसी लिए तो हम कहते हैं कि बच्चे भगवान का रूप होते हैं । सर पर ग्राई बड़ी से बड़ी मुसीबत टल जाती है ।

निगार अहमद—शाहजहांपुरी : मैंने एक माह पहले दूसरी बहन नामक कहानी भेजी थी ग्रौर जबाव के लिए डाक टिकट भी रखा था । परन्तु ग्रापने ग्रब तक कोई उत्तर नहीं दिया है ।

उ० : जिस गाड़ी में उत्तर सवार होते हैं उस प्लेटफार्म पर रचनाग्रों की कतार लगी है । ग्रपका नम्बर ग्राने पर ग्रापकी रचना का उत्तर गाड़ी में चढ़ जाएगा ।

ब्रह्मचारी ओम प्रकाश जायसवाल—सीतामढ़ी : क्या कारण है कि योग्य, मेहनती ग्रौर ईमानदार ग्रादमी भी जीवन की बाजी हार जाते हैं ।

उ० : जीवन की बाजी जीतने के लिए जो कुछ ग्रापने कहा वही काफी नहीं है । मेहनती ईमानदार तो वह भी कम नहीं होता जो गर्मियों की चिलचिलाती धूप में सड़क पर पत्थर कूटता है । पर चाचा बातूनी ग्रौर राजनारायण कोई-कोई ही बन पाता है... हे नारायण...! हे नारायण...!!

विकी साहनी—इन्दौर : हमें पता है, ग्रापकी उम्र का 'इन्टरवैल' तो हो चुका है । क्या 'दि एण्ड' भी होने वाला है ?

उ० : ग्रभी तो कास्ट ही चल रही है विकी साहेब ग्रलिफ लैला की दास्तान से भी बड़ी है हमारी कहानी । ग्रगर ग्राप इस बात पर खुश होना चाहते हैं तो हमसे यह शेर सुन लीजिये जो हम ग्रपने 'दि एण्ड' पर कहेंगे ।

बहुत गौर से सुन रहा था जमाना,
हम ही सो गये दास्तां कहते-कहते ।

अमरजीत खुराना—हलद्वानी : क्या हर ग्रादमी में कोई न कोई कमजोरी होती है ?

उ० : जी हां ! ग्रौर कोई-कोई कमजोरी ऐसी भी होती है, जो ग्रच्छी लगती है । जैसे हमारा कमजोर दिल, जिसके लिए कहा गया है—

मुहब्बत के लिए दिल ढूंढ़ कोई टूटने वाला,
ये वो शै है जिसे रखते हैं नाजुक ग्राबगीनों में ।

ग्रापस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मदहोश

...पना कुरमुरा

अमेरिकन युवती (अपने पति से)—डार्लिंग, मैंने सुना है कि कहीं-कहीं लोग घोड़ा लेकर अपनी पत्नी को बदले में दे देते हैं। यदि तुम्हें कोई घोड़ा दे तो तुम तो ऐसा न करोगे ?

पति—घोड़ा, माई डियर ? तुम मुझे क्या समझती हो ? मैं मोटर कार से कम के प्रस्ताव पर विचार न करूंगा।

●

सेना के एक अफसर को सात दिन की छुट्टी मिली। उसने अपनी पत्नी को तार देकर बुला लिया। दोनों एक होटल में गये। अफसर ने ठहरने की जगह मांगी। मैनेजर ने कहा—प्रमाण-पत्र दीजिए कि यह महिला आपकी पत्नी हैं तभी स्थान मिलेगा।

अफसर चुप हो गया। वह पत्नी को प्रमाण-पत्र लाने को लिखना भूल गया था। यह ज्ञात होने पर पत्नी पति पर बेहद बिगड़ खड़ी हुई।

मैनेजर ने कहा—मैं समझ गया कि आप इनकी पत्नी हैं। ३४ नं० कमरे में जाकर ठहरिए।

●

'प्रेम भी विचित्र चीज है,' शीला बोली। 'जब मेरे पति लड़ाई में गए तो मेरी तस्वीर अपने साथ ले गए थे। जिस लड़ाई में भी वह लड़े, मेरी तस्वीर को हमेशा साथ रखा।'

उसकी एक सहेली ने यह सुन कर कहा, 'शायद उन्होंने यह सोचा होगा कि इससे दुश्मन डर कर भाग जायेंगे।'

●

एक सिनेमा घर में एक पति-पत्नी लगभग आधा समय आपस में बातें ही करते रहे। उनके पास बैठे दर्शकों को यह बड़ा बुरा लग रहा था। जब एक दर्शक से नहीं रहा गया तो वह बोल उठा—क्या तोते की तरह टांय-टांय लगा रखी है। कभी चुप ही नहीं होते।

इस पर पति ने बिगड़ कर कहा—क्या आप हमारे बारे में कह रहे हैं ?

उत्तर मिला—जी नहीं। आपको कहां, फिल्म वालों को कह रहा हूं। शुरू से ही बकवास करे जा रहे हैं। आपकी दिलकश बातों का एक शब्द भी नहीं सुनने दिया।

●

पत्नी—(हर समय पढ़ने वाले पति से)—क्या ही अच्छा होता यदि मैं किताब होती और हर समय तुम्हारी आंखों के सामने होती।

पति—(जो अपनी श्रीमती जी से बहुत तंग आ गये थे) क्या ही अच्छा होता कि तुम कलैण्डर होतीं ताकि मैं हर साल बदल लिया करता।

●

झगड़े के बाद लीला अपने पति से बोली—'अब तो हमें शान्ति से रहना चाहिए। मैं तब अपनी गलती मानूंगी जब आप यह कह दें कि मेरी कोई गलती नहीं है।'

●

पृष्ठ १२ से आगे

हैंडरसन उर्फ जगदेव का हाथ उसकी पैंट की जेब की ओर सरक गया था।

मिसेज हैंडरसन ने हैंडबैग खोल लिया था।

रमणीका पीछे हट कर किसी चीज पर हाथ डालने लगी थी।

राजीव और बलजीत के रिवाल्वर से दो गोलियां निकलीं।

जगदेव जोर से चीख उठा। यह शायद उसकी अन्तिम चीख थी। उसके सीने में लाल दाग फैलने लगा था।

दूसरी गोली मिसेज हैंडरसन के बाजू में लगी थी और वह पीछे की ओर गिर कर तड़पने लगी।

राजीव की तीसरी गोली रमणीका की कलाई में लगी।

सफेद लिबास वाली मुड़ कर भागने लगी तो बलजीत ने आगे बढ़ कर उसे दबोच लिया और जूडो का दावं मार कर जमीन पर पटक दिया। उसका घूंघट पलट गया। वह पचास वर्ष के लगभग आयु की थी और फटी-फटी आंखों से बलजीत को देख रही थी। उसके होंठों से रुलाई फूट निकली, 'मेरी प्रतिज्ञा अधूरी रह गई! मेरा कलेजा ठण्डा न हो सका! बारहवीं दुल्हन हाथ में आकर भी निकल गई!'

बलजीत भी हैरान रह गया, 'तुमने... तुमने बारह दुल्हनों का खून बहाने की प्रतिज्ञा ले रखी थी?'

'हाँ, मैंने प्रतिज्ञा की थी कि अपने इकलौते बेटे का बदला बारह दुल्हनों का खून करके लूंगी। ग्यारह दुल्हनों का खून मैं पहले ही पी चुकी हूं।'

'ग्यारहवीं दुल्हन कौन थी?'

'सरोज। उसे गिरधर द्विवेदी ठिकाने लगा आया था, मगर हरामजादा बाद में गद्दार निकला। उसने मेरी सहेली सुनीता और उसके गुलाम नीतू पर हमला किया। यहां तक कि जेवर भी उड़ा ले गया।'

'सुनीता कौन? वही जो सेठानी थी?'

'हाँ। गिरधर को भी उसके किये का फल चखा दिया गया। आप मशहूर जासूस बलजीत हैं?'

'हाँ।'

'वह हमारा भेद खोलने आपके पास गया था।'

'उसे पीठ पीछे किसने गोली मारी थी?'

'रमणीका ने। शायद उसने मरते-मरते भेद खोल दिया था, वर्ना आप यहां न पहुंच पाते।'

बलजीत हंसते हुए बोला, 'नहीं, गिरधर बेचारा तो कुछ बताने से पहले ही दम तोड़ गया था। सरोज के मामले में पहली बार उसके दिल-दिमाग ने पलटा खाया था। उसने सरोज को जान से नहीं मारा था, बल्कि बेहोशी की हालत में ही उसे वह कार की डिकी में रख आया था। यहाँ तक कि उसने डिकी भी बन्द नहीं की थी, ताकि सरोज का दम न घुट जाय।'

'मुझे भी उस पर शक था तो उसने पहले से गद्दारी शुरू कर दी थी! अब समझी! तब तो बारहवीं दुल्हन का खून करने के बाद भी मेरी प्रतिज्ञा अधूरी ही रहती। ग्यारहवीं दुल्हन जो बच गई!'

'सरोज जिन्दा है और अपने घर में सुख भोग रही है।'

'अगर गिरधर ने हमारा राज नहीं खोला तो आप यहां तक कैसे पहुंच गए? हम तो वर्षों तक आपको चकमा दे सकते थे।'

'चकमा किसी के बाप की बापौती नहीं नहीं।' बलजीत ने कहा, 'चकमा देना हम भी जानते हैं। आपका जगदेव उर्फ हैंडरसन हमारे चकमे में आ गया, तभी तो हमने आपको आ दबोचा। यह जो बारहवीं दुल्हन है, इसे पहचानती हैं?'

सफेद लिबास वाली ने घूर कर चबूतरे की ओर देखा।

बलजीत हंसते हुए बोला, 'यह मेरी असिस्टेंट अनिला है। अच्छी तरह पहचान लो! इस दुल्हन का खून बहाना आसान नहीं है, श्रीमती जी! मैंने उस हाथ को ही तोड़ डाला है जो अनिला पर बुरी नीयत से कभी उठा।'

सफेद लिबास वाली ने मिसेज हैंडरसन को धिक्कारा, 'परवीन! जगदेव तो गधा निकला, मगर तुम्हारी आंखें भी क्या फूट गई थीं जो इतना बड़ा धोखा खा गईं? बलजीत की असिस्टेंट को भी न पहचान सकीं? तुम्हारी भूल ने मुझे मेरी प्रतिज्ञा भी पूरी न करने दी।'

'परवीन बेचारी क्या कर लेती?' बलजीत ने ठहाका लगाते हुए कहा, 'अनिला का मेकअप ऐसा-वैसा नहीं होता कि हर ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा इसे पहचान ले।'

परवीन बोली, 'हमारे तो वहम में भी यह बात नहीं थी कि बारहवीं दुल्हन जाने माने जासूस बलजीत की असिस्टेंट होगी।'

'खैर, मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए ही जिन्दा थी। अब जबकि मेरी प्रतिज्ञा अधूरी रह गई, मैं जीवित नहीं रहना चाहती।'

'क्या मैं पूछ सकता हूं कि आप कौन हैं?'

'जरूर...'

'अब जानकर भी क्या कीजिएगा? समझ लीजिए कि मैं हत्यारी हूं। सरोज बच गई तो अपने भाग्य से बची। अनिला बच गई तो आपकी चौकसी से। मैं अब भी अपने को बारह दुल्हनों की हत्यारी मानती हूं। दस खून किए हों या बारह, सजा एक ही है।'

'आप अपना नाम नहीं बताना चाहतीं तो न बताइए, मगर मैं आपका नाम जानता हूं।' बलजीत मुस्कराते हुए बोला, 'आप मुरादाबाद की मिसेज शोभा रस्तोगी हैं, जिनका इकलौता बेटा मार डाला गया था। क्या मैं झूठ बोल रहा हूं।'

'नहीं।'

'आपके बेटे की हत्या में आपकी बहू निर्जला का हाथ था! क्या यह सच?'

सफेद लिबास वाली मिसेज शोभा रस्तोगी हक्की-बक्की रह गई। उसने चेहरा झुका लिया और धीमी आवाज में पूछा, 'आप यह सब कैसे जान गए?'

'मैं जासूस हूं, मिसेज शोभा! मैंने आसपास की सभी कोतवालियों से नई दुल्हनों की हत्या के बारे में रिपोर्ट मंगा ली थी। पहली हत्या मुरादाबाद में हुई थी। सरोज के अपहरण के साथ ही समझ गया था कि यह हत्याकाण्ड दुल्हनों से सम्बन्ध रखता है और कोई आप जैसी सास यह सब करवा रही है। आपके ग्यारह फोटो भी मेरे हाथ लग गए तो सब हत्याओं का भेद मेरे सामने खुल गया। आज रात मुरादाबाद की कोतवाली से पहली हत्या की रिपोर्ट मिली तो मैं सारा रहस्य समझ गया।'

'ओह! तो आपको फोटो भी मिल गयीं?'

'हाँ; नीतू और सुनीता के नये ठिकाने से ग्यारह फोटो मिलीं। उनमें चबूतरों पर लिटाई दुल्हनों के सीने पर आटे के दीये जलते दिखाए गए थे। दुल्हनों के बदन पर सिन्दूर पुता देख कर मैं यह भी समझ गया कि कोई सास अपनी किसी खास प्रतिज्ञा को पूरा करने में लगी है। हरेक फोटो में चबूतरे के पीछे आप ही थाली में दीये जला कर खड़ी दिखाई गई हैं।'

क्रमशः

'हां, हर फोटो में मैं मौजूद थी।'

'मिसेज शोभा ! उन तस्वीरों को देख कर ही मैं समझ गया था कि इस हत्याकाण्ड के पीछे एक औरत का हाथ है और वह औरत बदला लेने के लिए सिर-धड़ की बाजी लगाए हुए है। यही मालूम करने के लिए मैंने पुलिस इन्स्पेक्टर आदर्श अरोड़ा की ड्यूटी लगाई कि वह आसपास के कस्बों और शहरों की कोतवालियों से नयी दुल्हनों की हत्याओं के बारे में सभी सूचनाए इकट्ठी करें।'

'ओह !' मिसेज शोभा रस्तोगी ने जैसे पूरी तरह हार मान ली।

'मैंने सोचा कि ग्यारह का अंक अटपटा है। हो सकता है कि हत्यारी ने एक दर्जन या पन्द्रह दुल्हनों का खून बहाने की सौगन्ध उठा रखी हो। तब मुझे एक चाल सूझी।' बलजीत बोला।

'कैसी चाल ?'

'मैंने अनिला को नयी-नवेली दुल्हन के मेकअप में जगह-जगह शॉपिंग के लिए भेजा। मेरी चाल कितनी सफल रही, इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि आप अब मेरे पंजे में हैं। अब मैं आपसे पूछता हूं कि हत्याओं का उद्देश्य मैं बताऊं या आप बताएंगी ?'

'बलजीत बाबू ! मेरा इकलौता बेटा मार डाला गया। जब किसी को मालूम हो जाय कि उसके जवान बेटे को बहू ने कत्ल किया है तो बदला लिये बिना किसे चैन की सांस आ सकती है ?' मिसेज शोभा ने दर्द-नाक लहजे में कहा, 'निर्जला शादी से पहले किसी लड़के के प्यार में फंसी हुई थी। मेरे बेटे प्रदीप को इसका पता चल गया। उसने निर्जला से कहा कि शादी के बाद वह अपने प्रेमी से मिलना छोड़ दे, वर्ना वह उसे जान से मार डालेगा। मेरे बेटे ने सिर्फ डराने के लिए ऐसी धमकी दी थी। मैं अच्छी तरह जानती थी कि मेरा बेटा किसी को जान से नहीं मार सकता। मगर...'

'मगर क्या ?'

'बलजीत बाबू ! निर्जला ने उस धमकी को सच मान लिया। उसने अपने प्रेमी की मदद से मेरे प्रदीप को मरवा दिया। वह खुद भी थोड़ा घाव लगा बैठी, ताकि लोग समझें कि प्रदीप को बचाने में वह भी जख्मी हुई थी। मुझे इस साजिश का पता चल गया। तब मैंने प्रतिज्ञा की कि मैं एक नहीं, एक दर्जन निर्जला जैसी दुल्हनों का खून बहाऊंगी।'

'तो सबसे पहले आपने निर्जला को ठिकाने लगाया।'

'उसे कैसे बख्श देती ? उसी ने तो मेरे प्रदीप की हत्या की थी।

'निर्जला का प्रेमी कौन था ?' बलजीत ने पूछा।

'इसका पता तो मुझे भी बहुत देर बाद चला कि उसका प्रेमी कौल था। मैंने कौल को उसी छुरी से कत्ल करा दिया। वह छुरी रमणीका चाय खाने से चुरा लाई थी। कौल की हत्या करने के लिए ही वह कौल की प्रेमिका बन गई थी।'

'कौल को किसने कत्ल किया ?'

'जगदेव ने।' शोभा ने बताया, 'निर्जला की हत्या के बाद कौल डर के मारे यहां बरेली रोड पर 'मुगल कारपेट्स' दुकान खोल बैठा।'

बलजीत ने पूछा, 'अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए आपने रमणीका, सुनीता, नीतू, गिरधर, जगदेव और परवीन को अपने साथ कैसे मिलाया ?'

'बलजीत बाबू ! रुपये में बड़ी ताकत है। इससे आप किसी भी चीज को खरीद सकते हैं। मैंने मुरादाबाद के मशहूर बदमाश गिरधर को खुले दिल से दौलत का लालच दिया। धीरे-धीरे ये सब लोग हमारे साथ खिंचते चले आए। गिरधर दगा दे गया। मुझे भी उसे दगाबाजी का मजा चखाना पड़ा।'

रमणीका और परवीन जोर-जोर से तड़प रही थीं।

'राजीव !' बलजीत ने कहा, 'तुम इन्स्पेक्टर आदर्श को फोन करो कि वह अपने साथ एक मुर्दा-गाड़ी, तीन आदमियों के वारंट-गिरफ्तारी और पुलिस डाक्टर लेकर तुरन्त यहां पहुंचें।'

राजीव ड्राइंगरूम में चला गया।

बलजीत ने पत्थर के चबूतरे पर लेटी अनिला की ओर इशारा करते हुए पूछा, 'अनिला कब तक बेहोश रहेगी ?'

'छः घंटे। डाक्टर शायद इसे जल्द होश में ले आए।' शोभा ने जवाब दिया।

'मिसेज शोभा ! आप सचमुच हौसले वाली हैं। अपने अंजाम को देखते हुए भी आपको कोई घबराहट नहीं, यह अचम्भे की बात है !'

'बलजीत बाबू ! मैं क्यों घबराऊं। मैं तो पहले ही मरी हुई हूं। मेरी मौत उसी दिन हो गई थी जिस दिन मेरे बेटे प्रदीप की हत्या कर दी गई।' यह कहते हुए मिसेज शोभा की आंखें डबडबा आईं।

इतने में राजीव फोन करके लौट आया। उसने बताया, 'फोन सुन कर इन्स्पेक्टर साहब फूले नहीं समा रहे थे। वह आ रहे हैं।'

थोड़ी देर बाद इन्स्पेक्टर अरोड़ा अपने साथ पुलिस दल और गाड़ियां लेकर आ पहुंचा। वह मुर्दा-गाड़ी भी लेता आया था। जब राजीव उन्हें उस कमरे में लाया, जिसमें अनिला को चबूतरे पर लिटाया हुआ था, तो इन्स्पेक्टर आदर्श अरोड़ा और उसके पुलिस कर्मचारी जगदेव और सफेद लिबास वाली के साथ घायलों को देख कर दंग रह गए।

बलजीत ने इन्स्पेक्टर आदर्श को सारा किस्सा सुना दिया जिसे सुन कर पुलिस वाले और भी हैरान रह गए।

पुलिस डाक्टर ने अनिला को होश में लाने वाला इंजेक्शन लगाया।

इधर पुलिस ने अपराधियों को अपनी हिरासत में लिया, उधर अनिला होश में आ गई।

॥ समाप्त ॥

अगले सप्ताह पढ़िये

कैप्टन युद्धवीर का नया धारावाहिक उपन्यास

खौफनाक आवाजें

टेनिस कैसे खेलें

स्कोर-प्रणाली—टेबल टेनिस की स्कोर-प्रणाली अन्य कोर्ट खेलों की अपेक्षा सुगम है। दोनों तरफ का कोई भी खिलाड़ी पाइंट जीत सकता है, चाहे वह सर्विस कर रहा हो अथवा सर्विस की गई गेंद को खेल रहा हो।

वह निर्णय टॉस द्वारा किया जाता है कि सर्विस कौन खिलाड़ी करेगा। फिर टास जीतने वाला निम्न में से कोई सा भी विकल्प चुन सकता है—

(क) खिलाड़ी चाहे तो पहली सर्विस स्वयं ले सकता है। (ख) वह चाहे तो पहली सर्विस का अधिकार प्रतिद्वन्द्वी को दे सकता है। (ग) साइड का चुनाव कर सकता है।

यदि टास का विजेता (क) अथवा (ख) का चुनाव करता है तो दूसरे खिलाड़ी को (ग) का अधिकार रहता है और यदि वह (ग) चुनता है तो दूसरे खिलाड़ी को (क) अथवा (ख) का अधिकार रहेगा।

प्रत्येक गेम के बाद साइड बदली जाती है और मैच के निर्णायक गेम में साइड दस पाइन्ट के पहले स्कोर पर बदली जाती है।

नियमानुसार प्रत्येक गेम इक्कीस पाइंट का होता है, बशर्ते दोनों खिलाड़ियों का स्कोर २० नहीं हो। ऐसी स्थिति में खेल का जारी रहना चाहिये और दोनों खिलाड़ी बारी-बारी से सर्विस करते हैं। खेल तब तक चलता रहता है, जब तक कोई खिलाड़ी स्पष्ट रूप से दो पाइंट से आगे नहीं बढ़ जाता। इस प्रकार का ड्यूस स्कोर प्रायः हो जाता है और स्कोर २५-२३, ३२-३० अथवा जो भी अन्तिम संख्या हो, उसी के अनुसार रहता है। दो खिलाड़ियों अथवा जोड़ियों के बीच मैच तीन, पांच, या एक गेम (आजकल कम) का होता है। तीन गेम के बीच में दो और पांच गेम के मैच में तीन गेम जीतने वाला खिलाड़ी विजयी माना जाता है। मैच कितने गेम का हो, इसका उल्लेख प्रत्येक प्रतियोगिता के नियमों में स्पष्ट रूप से होगा।

अपनी तरफ टिप्पा खाने से पूर्व ही गेंद को बल्ले पर ले लेना 'वाली करना' कहलाता है और सामान्य खेल में ऐसा करने का मतलब है पाइंट को खो देना। खिलाड़ी को इस बात का अभ्यास करना आवश्यक है कि यदि वह स्ट्रोक न लगाना चाहे तो गेंद को गुजर जाने दे अर्थात यदि ऐसा लगता है कि गेंद टेबल पर टिप्पा नहीं खायेगी।

यदि सर्विस प्राप्त करने वाला नेट की डोरी से टकराई हुई सर्विस को बल्ले पर ले लेता है, तो यह 'लेट' है। परन्तु यदि वह सामान्य खेल में ऐसा करता है यानि गेंद वाली करता है तो वह पाइट खो देगा, चाहे वह ऐसा नेट की डोरी को छूकर आने वाली गेंद पर ही क्यों न करे।

यदि वह मुक्त हाथ टेबल को छूता है, तो शाट लगाने वाला खिलाड़ी खेल के दौरान टेबल की सतह को किसी भी प्रकार हिला देता है अथवा नेट को या उसके आलम्बों को छू लेता है, तो वह पाइंट खो देता है। नेट की डोरी छूकर आने वाली गेंदों को सामान्य ढंग से खेलना होता है (सर्विस की गेंदों को छोड़ कर जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है) 'किनारा गेंद' को अच्छी तरह लौटाया गया माना जाता है। यदि एम्पायर की दृष्टि में गेंद ने टेबल को खेल सतह को स्पर्श किया है, पार्श्व को नहीं।

युगल खेल—टेबल टेनिस के खेल में पुरुष युगल और सह-युगल—दोनों प्रकार के मैच बहुत प्रचलित हैं। ध्यान रहे कि लान टेनिस और अधिकांश अन्य कोर्ट खेलों के विपरीत टेबल टेनिस के युगल मैच में जोड़ी के दोनों साथी एक निश्चित क्रम में बारी-बारी से गेंद को खेलते हैं। फलस्वरूप एक समूचे खेल में एक खिलाड़ी को एक विशिष्ट प्रतिद्वन्द्वी से ही गेंद खेलने को मिलती है।

युगल खेल के इस नियम के कारण किसी एक जोड़ी को लाभ भी खूब हो जाता है। उदाहरणस्वरूप सह-युगल मैच को लिया जा सकता है, जिसमें एक महिला खिलाड़ी को पुरुष प्रतिद्वन्द्वी की गेंदों को खेलना पड़ता है। यही कारण है कि मैच के प्रत्येक गेम के बाद 'खेल का क्रम' बदल जाता है।

इस प्रकार यदि अ-ब जोड़ी को 'सर्विस चयन' का अधिकार है तो उनकी प्रतिद्वन्द्वी जोड़ी क-ख को स्वतः 'क्रम चयन' का अधिकार होगा, परन्तु केवल पहले गे[म] ... अन्तिम निर्णायक गेम तक प्रत्ये[क] ... पश्चात उपरोक्त 'खेल का क्रम' ... है।

ऐसे किसी निर्णायक 'ब' गे[म] ... गेम के मैच में वही गेम निर्णाय[क] ... खेल क्रम अन्तिम बार के लिये ... का पहला स्कोर पहुंचने पर बद[ल] ...

युगल खेल सर्विस के लिए ... ध्यान में रहे कि 'सर्विस' कोर्ट ... से दूसरी ओर के दाएं आधे भ[ाग] ... जाती है। कोर्ट को दो अर्द्ध भा[गों] ... के मध्य से होकर जाने वाली ... रेखा से विभाजित किया जाता है ... इस रेखा पर टिप्पा खाती है, तो ... ढंग से खेला गया माना जाता है ...

पहले ५ पाइन्ट तक सर्विस ... बाद सर्विस करने वाला खिलाड़ी ... से हट जाता है और उसका साथ[ी] ... की ५ सर्विसों को खेलने के लिये ... ग्रहण कर लेता है और फिर स्क[ोर] ... करता है।

इस प्रकार अ-ब और क-ख ... सर्विस क्रम इस प्रकार से होगा ... पाइन्टों के लिये—अ क को स[र्विस] ... दूसरे ५ पाइन्टों के लिये—क ब ... करेगा, तीसरे ५ पाइन्टों के लिए ... सर्विस करेगा, चौथे ५ पाइन्टों ... अ को सर्विस करेगा और उपयु[क्त] ... तक चलता रहेगा, जब तक एक ... न जीत ले अथवा 'ड्यूस' न हो ...

२०-२० स्कोर (ड्यूस) हो[ने] ... उक्त क्रम से होगी, परन्तु इस ... खिलाड़ी लगातार ५ सर्विस कर[ने] ... केवल एक सर्विस करेगा और ... प्राप्त करेगा।

अच्छे खेल के लिए नि[यम] ज्ञान

टेबल टेनिस की हलकी-फुल्की ... नियन्त्रण में स्पिन की महत्त्वपूर्ण ... इस खेल में अनेक प्रकार के स्ट्रो[क] ... लाये जाते हैं, परन्तु चाहे जो स्ट्रो[क] ... हो, सफलता इस बात पर निर्भ[र] ... कि गेंद को किस तरह स्पिन क[र] ... और प्रतिद्वन्द्वी की स्पिन का मुका[बला] ... प्रकार किया जाए।

ानकुमार धींगड़ा, १२०१ रानी बाग दिल्ली, २१ प्यार करना, रेल में बैठ गप्प मारना और दीवाना ा।

अलवी असलम नजमुदीन, रोयल स्टोर्स, सलापस लोड, अहमदाबाद, १५ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता करना व गुरू की सेवा करना।

महेन्द्र कुमार बेद 'मीत', २६, पी. के. टैगौर स्ट्रीट, कलकत्ता, १६ वर्ष, पत्र मित्रता, भ्रमण के लिए विदेशों में जाना और कहानी लिखना।

विजय कुमार कुकरेजा, मकान नं. १११३, गली नं. ११, गोविन्दपुरी, नई दिल्ली, २२ वर्ष, रेडियो सुनना, गीत गाना, फिल्में देखना।

रमेश कुमार पंजाबी, लवली फैन्सी स्टोर, शाप डी. १५, गांधी धाम (कच्छ), २४ वर्ष, सिधी प्रोग्राम में फर्माइश भेजना और दीवाना पढ़ना।

जितेन्द्र कुमार पी. खजानी, ८८ सी., बुरहानी बिल्डिंग, मुम्बरा, १८ वर्ष, पत्र मित्रता, कहानियां लिखना, विदेशी फिल्में देखना।

कमलेश कुमार, राधो माजरा, पटियाला, १७ वर्ष, फोटो सुन्दर खींचना, दीवाना पढ़ना, कबाड़े का सामान खरीदना व दुकान करना।

न्द प्रकाश गुप्ता द्वारा श्री एम. गुप्ता, सदर बाजार, ासपुर (म. प्र.), १४ दीवाना पढ़ना, फिल्में ा, हंसना।
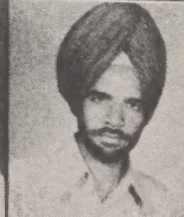
मदन लाल शर्मा, मकान नं. सी. ३४५, थरमल कालोनी, थरमल प्लांट, भटिंडा, २६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, गीत गाना, धार्मिक पुस्तकें पढ़ना।

सुरिन्द्र कुमार शर्मा, म. नं ७/-५२, मोरी गेट, फिरोजपुर शहर, २२ वर्ष, टेबल टेनिस खेलना, पढ़ाई करना, पत्र-मित्रता व पूजा करना।

गणेश्वर प्रसाद गुप्ता द्वारा श्री सिद्धेश्वर प्रसाद गुप्ता, मो करविगहिया, पटना, १५ वर्ष, भ्रमण करना, रचना लिखना व पढ़ना, फिल्म देखना।

बलबीर सिंह, क्लाथ डीलर, किच्छा (नैनीताल), २० वर्ष, दीवाना पढ़ना, मनोज कुमार की फिल्म देखना और शाम को स्नान करना।

विनोद कुमार गुप्ता, सन्त मेरिज स्कूल सामटोली, पो० सिमडेगा, रांची (बिहार), १३ वर्ष, नावल पढ़ना, कन्चा खेलना व साईकिल चलाना।

मुहम्मद जुबैर फरीदी, मो० बाजार बिलारी, जि० मुरादाबाद, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, कहानियाँ लिखना और दोस्ती करना।
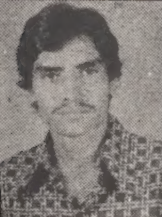
द कुमार पुरोहित जी. श्री निवासपुरी, नई ी, २० वर्ष, हाकी खेलना, ी बजाना, नौकरी के इधर-उधर भटकना।

नरेन्द्र कुमार राठौर, १/२७१ भूसा मन्डी फतेहगढ़ (उ. प्र.), १६ वर्ष, नक्शेबाजी, झाड़ना, खुदा का कुदरत को देखना व दीवाना पढ़ना।

भूपेश बाधवा, २३५, रजबन बाजार, करई गंज, मेरठ कैंट, १२ वर्ष, दीवाना पढ़ना, रेखा के साथ नाचना, शेख चिल्ली से मुलाकात करना।
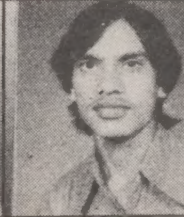
अशोक राजपूत गम्भीर, मो० काजीबाग, पो० काशीपुर (नैनीताल), १८ वर्ष, बच्चों से प्यार करना, शाखा लगाना, कहानी लिखना।

विजय लाहड़, १५६ पटपड़गंज, दिल्ली, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता करना व भारतीय तीर्थ स्थानों पर टहलने के लिए जाना।
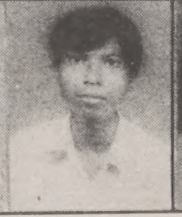
रमेश चन्द्र किसान, बिरमजीतपुर गर्धी रोड, कुम्हारवाड़ा, सुन्दरगंज (उड़ीसा), १६ वर्ष, एक्टिंग करना, स्कूल जाने में आनाकानी करना।

मुबारिक हुसैन नोड़ा, चौहान गली, सीतामऊ मन्दसौर, १६ वर्ष, जादुई पुस्तकें मंगाना, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना, बाल बढ़ाना।

ाहुर रहमान (मिस्बाह), कैल्लन की लाट, लखनऊ, वर्ष, टिकट संग्रह करना, मित्रता करना, दीवाना आदि।

रजनीश कुमार कक्कड़, दिल्ली गेट, फिरोजपुर शहर, १७ वर्ष, क्रिकेट में गवास्कर की तरह चौका लगाना और बाल बढ़ाना।

एम. फरीद अन्सारी, लिबर्टी फुट वियर कम्पनी, आगरा, २२ वर्ष, नाटक करना तथा हर किरदार को बड़ी खूबसूरती के साथ जूते पहनाना।

हरजीत सिंह द्वारा नानक सिंह, लोहम पट्टी, मो० बिहाटी, (बिहार), १३ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फिल्मी डायलाग बोलना व शेखी बघारना।
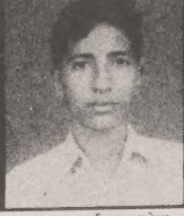
अरुण कुमार शर्मा द्वारा महेन्द्र ना० पांडे (वकील), बलभद्रपुर, पो० लहेरिया सराय, दरभंगा, बिहार, १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना।

राबर्ट, एस. एस. इण्टरप्राइज, २/१६, न. १३ कालका, जींद, १७ वर्ष, दूध के डिपो पर लाईन लगाना और लड़कों को छेड़कर अपनी पिटाई कराना।

सुनील गुलाटी, गुजरांवाला टाऊन, पार्ट-२, दिल्ली, २० वर्ष, पुस्तकें पढ़ना, जासूसी करना और जीनत की फिल्म देखना।
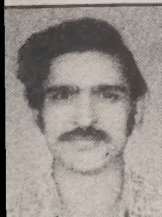
ा काका, रानी श्रृंगार स, कालका, २२ वर्ष, देखना, रसाले पढ़ना, मजाक करना, दीवाना ा आदि।

विनोद कुमार सिंह, भारत ब्रिक फील्ड, मनिरामपुर, ब्यैरकपुर, २४ परगना, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना व पत्र मित्रता करना।

उमेशचन्द्र तुनस्याव हुस्नप्रेमी, मीनाक्षी साड़ी सेन्टर, हलवाई लेन, रायपुर (म. प्र.), १६ वर्ष, सुन्दरता का प्रेमी, पत्र व्यवहार करना।
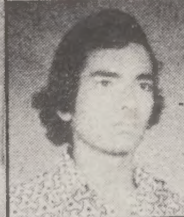
नारायण दास आसूदानी, चन्द्रा कालोनी, मदन गंज, किशनगढ़ (राज.), १६ वर्ष, फिल्मी किताबें पढ़ना, क्रिकेट खेलना आदि।

देव कुमार, पूसा रोड, समस्तीपुर (बिहार), २० वर्ष, आपसी प्रेम से मित्रता करना, दीवाना पढ़ना तथा अन्य को सलाह देना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रेन्ड' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लि ा न भूलें।

हमारा पता : दीवाना ८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______

पता ______

आयु ______ शौक ______

स, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

१२ दिसम्बर से १८ दिसम्बर ७७ तक

मेष : माह दिसम्बर में कोई अप्रिय घटना होगी जिससे शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी पैदा हो सकती है, १२ दिसम्बर के बाद का समय संघर्षमय रहेगा, वैसे यह सप्ताह आपके लिए ठीक ही रहेगा।

वृष : यह माह आपके लिए संघर्षमय होने पर भी दिलचस्प रहेगा, कुछ महत्वपूर्ण कामों में सफलता पायेंगे, लाभ के साथ-साथ आर्थिक परेशानी भी बनी रहेगी, यह सप्ताह पर्याप्त अच्छा रहेगा।

मिथुन : इस माह के दौरान व्यर्थ की उलझनों से परेशानी एवं हानियां भी होती रहेंगी, वैसे आर्थिक दृष्टिकोण से १२ दिसम्बर के बाद का समय लाभप्रद रहेगा, इस सप्ताह कारोबार ठीक चलेगा।
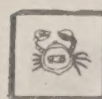
कर्क : इस माह में कुछेक परिवर्तन होने पर भी हालात में विशेष सुधार न हो सकेगा, १२ दिसम्बर से संघर्ष एवं उलझनें बढ़ने लगेंगी, कोई झूठा आरोप भी लग सकता है, इस सप्ताह सावधानी से रहें।

सिंह : माह दिसम्बर आपके लिए चिन्ताजनक होने के साथ-साथ दिलचस्प भी रहेगा, आर्थिक परेशानी अभी बनी रहेगी, यह सप्ताह भी अच्छा रहेगा, आमदनी अच्छी होगी, शत्रु से सतर्क रहें।

कन्या : पिछले माह से माह दिसम्बर काफी अच्छा रहेगा, चिन्ताएं एवं भाग-दौड़ में काफी कमी आवेगी, महत्वपूर्ण काम पूरे हो जायेंगे, यह सप्ताह भी तकरीबन अच्छा ही है, कामकाज में दिल लगेगा।
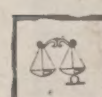
तुला : यह माह और सप्ताह दोनों ही आपके लिए काफी अच्छे कहे जा सकते हैं, विगत समय में किए कामों के शुभ फल मिलने लगेंगे, लाभ बढ़ेगा, कारोबार में सुधार होगा, व्यय बढ़ेगा।
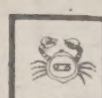
वृश्चिक : इस माह के दौरान शुभ-अशुभ मिश्रितफल मिलेंगे, एक तरफ लाभ होगा तो दूसरी ओर व्यर्थ के कामों में व्यय एवं समय की हानि होती रहेगी, यह सप्ताह ठीक ही रहेगा, लाभ अच्छा होगा।

धनु : अभी संघर्षपूर्ण एवं आर्थिक तंगी का दौर १२ दिसम्बर तक है, माह दिसम्बर और यह सप्ताह भी पहले से अच्छे रहेंगे, व्यापार सुधरेगा, और घरेलू जीवन तथा व्यापार में सुधार होगा।

मकर : इस माह में आप कारोबार में विशेष सुधार होता महसूस करेंगे, लाभ भी अच्छा होने लगेगा, लेकिन यह सप्ताह विशेष अच्छा नहीं है, सावधानी से रहें, व्यर्थ का वाद-विवाद होता रहेगा।
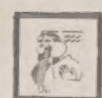
कुम्भ : यह सप्ताह और माह दिसम्बर भी आपके लिए व्यापारिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से लाभप्रद रहेंगे, आमदनी बढ़ेगी, शुभ कामों पर व्यय होगा, परन्तु ऋण सम्बन्धी काम न करें।
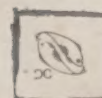
मीन : संघर्ष होने पर भी माह दिसम्बर आपके लिए लाभप्रद रहेगा, परन्तु बीच-बीच में आप थकावट तथा सुस्ती भी महसूस करते रहेंगे, इस सप्ताह में हालात ठीक-ठाक चलते रहेंगे।

राजेश खन्ना

मैं अपनी फिल्मों के अन्तिम दृश्य में मरना चाहता हूं !
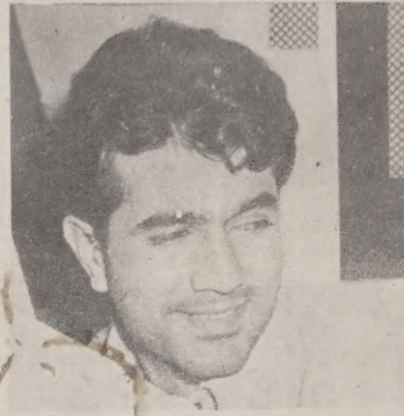
विजय भारद्वाज

एक समय था जब राजेश खन्ना के नाम की धूम थी। जिस फिल्म में राजेशखन्ना होता था वह फिल्म सौ प्रतिशत हिट होती थी। बड़े-बड़े निर्माता राजेश खन्ना को 'सुपर स्टार' के नाम से पुकारने लगे थे और किसी भी कीमत पर राजेश खन्ना को अपनी फिल्म में साईन करने को उतारू थे। कालेज के लड़के-लड़कियों का तो हाल ही बुरा था। अधिकतर लड़कियां राजेश खन्ना से दिल ही दिल में प्रेम करने लगी थीं। यदि राजेश खन्ना कमीज का बटन खोल कर चलता तो वही फैशन बन जाता था और रोज सैंकड़ों प्रसशंक राजेश खन्ना के बंगले आशीर्वाद के बाहर खड़े अपने चहेते कलाकार के दर्शन करने आते। राजेश खन्ना भी उन्हें कभी निराश नहीं करता; रोज नियत समय पर अपने बंगले की बालकानी में आकर उनकी उम्मीदें पूरी करता। यह सब कुछ पलक झपकते ही नहीं हुआ। इसके लिये राजेश खन्ना को बेहद परिश्रम करना पड़ा। फिल्मों में प्रवेश से पहले राजेश खन्ना स्टेज आर्टिस्ट के रूप में प्रसिद्ध था। राजेश खन्ना की प्रथम फिल्म थी 'राज' जिसकी हीरोइन भी नई अभिनेत्री थी बबीता। फिल्म 'बहारों के सपने' के बाद से फिल्म जगत में राजेश खन्ना प्रसिद्धि प्राप्त करता चला गया।

राजेश खन्ना की लगातार बीस फिल्में हिट हुईं यह अपने आप में एक रिकार्ड है। उनमें से अधिकतर फिल्मों ने सिल्वर जुबली मनाई। फिल्म 'आराधना', 'सफर', 'खामोशी' व 'आनन्द', 'सच्चा झूठा', 'दो रास्ते', 'हाथी मेरेसाथी', 'आन मिलो सजना', 'नमकहराम', 'आपकी कसम', 'प्रेम नगर', व 'आविष्कार', आदि ने तो पिछली सभी फिल्मों के रिकार्ड तोड़ कर एक तरफ रख दिये।

स्वभाव में मिलनसार है राजेश खन्ना, इतनी सफलता प्राप्ति के बाद भी घमण्ड नाम की चीज इसमें ढूंढ़ने से भी नहीं मिलती। डिम्पल कपाड़िया से विवाह के उपरान्त राजेश खन्ना को 'मार्केट वैल्यु' धीरे-धीरे कम होती चली गई।

आज वह बात नहीं है जो कल थी। आज मल्टी स्टार वाली फिल्में बन रही हैं, लेकिन राजेश खन्ना को अपनी फिल्में असफल होने का कोई दुख नहीं है क्योंकि वह अभिनय में अपनी ओर से कोई कसर नहीं रखता। कई बार मजाक में राजेश खन्ना अपने निर्माताओं से कहता है यदि फिल्म हिट करनी है तो फिल्म के अन्त में मुझे मार दो (क्योंकि अधिकतर फिल्में वह सफल रही हैं जिनमें राजेश खन्ना मरा है)।

आज भी राजेश खन्ना अपनी जगह अटल है। राजेश खन्ना का असली नाम जतिन खन्ना है।

हास्य अभिनेता महमूद, राजेश खन्ना का पक्का मित्र है। वैसे राजेश खन्ना का स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि जो एक बार मिल लिया वह राजेश को नहीं भूल सकता। नवोदित अभिनेत्रियों के साथ फिल्में साईन करके राजेश खन्ना ने एक नई परम्परा शुरू की है। क्योंकि वह चाहता है कि हर कलाकार को ऊपर उठने का मौका मिले। फिल्म 'सोनी महिवाल' में यह नवोदित अभिनेत्री रणजीता के साथ कार्य कर रहे हैं। फिल्म '००७' में पद्मिनी कपिला के साथ तथा अपनी साली सिम्पल के साथ फिल्म मजनून में जिसके निर्माता हैं इनके अपने श्वसुर।

इनकी आने वाली महत्वपूर्ण फिल्में हैं 'पलकों की छांव में' व 'चक्रव्यूह'।

जब यह स्टेज आर्टिस्ट था तब से ही यह दीवाना का दीवाना है।

आशीर्वाद कार्टर रोड, बान्द्रा
बम्बई—४०००५३